Semester – IV: THEORY

(Common Paper)

Paper Name

Paper – Inclusive Education

(समावेशी शिक्षा)

Unit I - Diversity and Inclusivity (विविधता और समावेशिता)

Unit :– 1.1 Meaning and concept of diversity (विविधता का अर्थ और अवधारणा)

विविधता की अवधारणा – विविधता से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है जिसमें समस्त भाषायी, क्षेत्रीय, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रुप से अलग–अलग रहने वाले मानव एक समुह, समाज या एक स्थान विशेष में साथ–साथ निवास करते हैं। ऐसा माना जाता है कि सभी व्यक्ति शारीरिक रचना की दृष्टि से समान होती है। उनके मूल ऐसे होते हैं जिन्हें विशेष लक्षणों के कारण ऐसे समूह में रखा जा सकता है जो उन लक्षणों मैं से निम्न लक्षण वाले समूहों से अलग होते हैं। अनेक ऐसे जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आधार हैं जो किसी भी देश के निवासियों में विविधता विकसित कर देते हैं। दूसरी ओर ऐसा भी माना जाता है कि कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से किसी अन्य व्यक्ति के समान नहीं होता है। लोगों में जो समानता हमें प्रजातीय लक्षणों के कारण दिखाई देती है, वस्तुतः यह केवल वैध समानता ही है। एक प्रजाति के लोग भी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आधार पर समूहों में ही हो सकते हैं। राजनीतिक दृष्टि से भी उनमें से कुछ अल्पसंख्यक समूह सत्ताधारी तथा शासक वर्ग के हो सकते हैं। समाजशास्त्र जैसे विषय में विविधता का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है।

विविधता का अर्थ – विविधता का आशय व्यक्तियों एवं समूहों में पाई जाने वाली असमानताएं हैं। विविधता के अवधारणा में स्वीकृति एवं सम्मान सन्निहित होते हैं। इसका अर्थ यह समझ लेना है कि प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट एवं अनुपम होता है तथा हमें अपने वैयक्तिक भेदों को मान्यता देनी चाहिए। ये भेद प्रजाति, सजाति, लिंग (जेण्डर), लैंगिग अभिविन्यासों. सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति, आयु, शारीरिक क्षमताओं, धार्मिक विश्वासों अथवा वैचारिकियो जैसे. पहलुओं के आधार पर हो सकते हैं। विविधता के अध्ययन से अभिप्राय इन भेदों का अन्वेषण सुरक्षित, सकारात्मक तथा पोषक वातावरण के रूप है। यह एक–दूसरे को समझने तथा सरल सहिष्णुता से विविधता के बहुमूल्य पहलुओं की ओर आगे बढ़ने से सम्बन्धित है। यदि ऐसा नहीं होगा तो कोई भी समाज विविधता के होते हुए अपना तथा स्थायित्व बनाए रखने में सफल नहीं हो सकता।

विविधता की अवधारणा के सम्बन्ध में यह तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि अमेरिका एवं भारत जैसे बहुलवादी एवं बहुसांस्कृतिक देशों में इसकी कोई सुस्पष्ट परिभाषा नहीं है तथा यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक संगठन से दूसरे संगठन तथा एक लेखक से दूसरे लेखक के लिए भिन्न हो

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

सकती है। कुछ संगठनों में विविधता प्रजाति, जेण्डर, धर्म तथा विकलांगता पर कठोरता से केन्द्रित होती है, जबकि अन्य संगठनों में विविधता की अवधारणा का विस्तार लैंगिक (यौन) अभिविन्यासों, शरीर की छवि, सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति आदि के रूप में हो सकता है। वेलनर ने विविधता का सम्प्रत्यीकरण लोगों में पाए जाने वाले वैयक्तिक भेदों तथा समानताओं की बहुलता के रूप में किया है। विविधता में अनेक मानवीय लक्षण जैसे प्रजाति, आयु, जाति, नस्ल, राष्ट्रीय उत्पत्ति, धर्म, संजाति, लैंगिक अभिविन्यास आदि सम्मिलित होते हैं।

Unit :– 1.2 Learner diversity (सीखने की विविधता) – विविधता की अवधारणा में स्वीकृति और सम्मान शामिल है। इसका मतलब यह समझना है कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है, और हमारे व्यक्तिगत मतभेदों को पहचानना है। ये नस्ल, जातीयता, लिंग, यौन अभिविन्यास, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, आयु, शारीरिक क्षमता, धार्मिक विश्वास, राजनीतिक विश्वास, या अन्य विचारधाराओं के आयामों के साथ हो सकते हैं। यह एक सुरक्षित , सकारात्मक और पोषक वातावरण में इन अंतरों की खोज है। यह प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निहित विविधता के समृद्ध आयामों को गले लगाने और जश्न मनाने के लिए एक दूसरे को समझने और सरल सहिष्णुता से परे जाने के बारे में है।

विविधता एक वास्तविकता है जो व्यक्तियों और समूहों द्वारा जनसांख्यिकीय और दार्शनिक मतभेदों के व्यापक स्पेक्ट्रम से बनाई गई है। विविधता का समर्थन करना और उसकी रक्षा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्तियों और समूहों को पूर्वाग्रह से मुक्त करके, और एक ऐसे माहौल को बढ़ावा देकर जहां समानता और आपसी सम्मान आंतरिक है।

विविधता '' का अर्थ केवल अंतर को स्वीकार करने या सहन करने से कहीं अधिक है।

सीखने की शैलियाँ (Learning Styles) – मनोवैज्ञानिकों और शिक्षकों ने सीखने के कई सिद्धांत विकसित किए हैं और सीखने की शैलियों की एक सारणी की पहचान की है। कुछ सीखने की शैली के सिद्धांत संवेदी मार्गों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जिसका उपयोग छात्र सीखने के लिए करते हैं। अन्य सिद्धांत भौतिक वातावरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसमें सीखना होता है। फिर भी अन्य लोग सामाजिक संपर्क पर जोर देते हैं क्योंकि यह सीखने से संबंधित है। जबकि यह खंड सीखने की शैलियों की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालता है, यह समझने पर जोर दिया जाता है कि व्यक्तिगत अंतर और प्राथमिकताएं सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अपने शिक्षण में विविधता जोड़ने से आपके छात्रों की सीखने की शैलियों को समायोजित किया जाएगा और आपके शिक्षण को अधिक रोमांचक और मनोरंजक बना दिया जाएगा।

देख कर सीखने वाले (Visual learners) :– दृश्य शिक्षार्थियों को अवधारणा को देखने की जरूरत है। शिक्षार्थियों के लिए विचार को देखने का एक तरीका विजुअलाइजेशन के माध्यम से है। ओवरहेड पारदर्शिता या बोर्ड का उपयोग करके बुनियादी अवधारणाओं पर चर्चा करें। इसके अलावा, पारदर्शिता या बोर्ड पर वर्णनात्मक वाक्यांश या विचार लिखने से पहले छात्रों से एक मानसिक चित्र बनाने के लिए कहें।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

दृश्य शिक्षार्थियों के लिए दृश्य सामग्री महत्वपूर्ण हैं। आज की पाठ्यपुस्तकें छवियों से भरी हुई हैं। कुछ छात्रों के लिए, ये चित्र सीखने की कुंजी हैं। दूसरों के लिए, वे सुदृढीकरण प्रदान करते हैं। पाठ्यपुस्तक में दृश्य छवियों के अलावा, ओवरहेड पारदर्शिता, वीडियो टेप, स्लाइड और प्रस्तुति ग्राफिक्स सभी का उपयोग छात्रों को अवधारणाओं और कौशल की कल्पना करने में मदद करने के लिए किया जा सकता है। समृद्ध मल्टीमीडिया घटकों वाली वेब साइटों का उपयोग प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करने या अवधारणाओं का पता लगाने के लिए प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। प्रदर्शन दृश्य शिक्षार्थियों को यह देखने की अनुमति देते हैं कि आप क्या कर रहे हैं जैसे आप करते हैं। जोड़तोड़ सभी शिक्षार्थियों के लिए दृश्य संकेत प्रदान करते हैं, लेकिन विशेष रूप से दृश्य शिक्षार्थियों के लिए सहायक होते हैं। दृश्य शिक्षार्थियों को भी मुद्रित सचित्रीय कार्यों को देखने से लाभ होता है।

- एक प्रदर्शन का वीडियो टेप करें और टेप को अध्ययन सहायता के रूप में पेश करें।
- अवधारणा की व्याख्या करते समय चार्ट, आरेख, आलेख, चित्र, मानचित्र, फोटो और तालिकाओं पर ध्यान केंद्रित करने का एक बिंदु बनाएं।
- बोर्ड पर असाइनमेंट लिखें और छात्रों को उन्हें अपने योजनाकारों में लिखने के लिए याद दिलाएं।
- पाठ की मुख्य सामग्री को समझने में मदद करने के लिए ग्राफिक आयोजक बनाएं।

प्रिंट शिक्षार्थी (Print learners) :– प्रिंट शिक्षार्थी डेटा को प्रिंट में देखना पसंद करते हैं, अधिमानतः शब्दों में मुद्रित। पाठ्यक्रम अवधारणाओं या किसी प्रक्रिया के चरणों का परिचय देते समय, प्रिंट शिक्षार्थी जानकारी के बारे में पढ़ना पसंद करते हैं और फिर एक चित्रण या अन्य दृश्य सहायता का अध्ययन करते हैं। दृश्य शिक्षार्थियों को भी मुद्रित सत्रीय कार्यों को देखने से लाभ होता है।

- प्रमुख शब्दों और अवधारणाओं को प्रस्तुत करते समय, पाठ्यपुस्तक का संदर्भ लें और पाठ्यपुस्तक के उदाहरणों का उपयोग करें। प्रिंट शिक्षार्थी बाद में वापस जा सकते हैं और सामग्री का अध्ययन कर सकते हैं।
- हैंडआउट्स और स्टडी शीट का उपयोग करने पर विचार करें। छात्र अपनी स्टडी शीट भी बना सकते हैं। वर्ड गेम प्रिंट शिक्षार्थियों को प्रमुख शब्दों और अवधारणाओं को समझने में मदद कर सकते हैं।

श्रवण शिक्षार्थी (Auditory learners) :– श्रवण शिक्षार्थी सुनकर सबसे अच्छा सीखते हैं। श्रवण शिक्षार्थी जो पाठ्यपुस्तक का पाठ पढ़ते हैं, प्रमुख विचारों के बोले गए सुदृढीकरण से लाभान्वित होते हैं। अन्य शिक्षकों, अतिथि वक्ताओं और परिवार के सदस्यों को अपनी कक्षा को संबोधित करने के लिए कहने पर विचार करें। छात्रों से चर्चा गतिविधियों के भाग के रूप में अपने पठन को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कहें। असाइनमेंट के लिए निर्देशों को जोर से पढ़ें और श्रवण शिक्षार्थियों को एक नई प्रक्रिया या प्रक्रिया में शामिल कदमों को बताना सुनिश्चित करें।

- स्पेलिंग बी के बाद प्रतिरूपित शब्दावली गतिविधि विकसित करें। इस तरह की गतिविधि सामाजिक संपर्क, प्रतिस्पर्धा और आंदोलन के अतिरिक्त लाभ प्रदान करती है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- व्याख्यान या टेप किए गए ट्यूटोरियल के माध्यम से चरणों की पहचान करें।
- छात्रों से जोड़ियों में या छोटे समूहों में एक–दूसरे को स्टेप्स सुनाने के लिए कहें। तीन के समूह में, उदाहरण के लिए, प्रत्येक छात्र को अन्य दो छात्रों को प्रक्रिया समझाने का अवसर मिलना चाहिए। इस प्रक्रिया के माध्यम से समूह में प्रत्येक छात्र एक बार प्रक्रिया की व्याख्या करेगा और प्रक्रिया को दो बार सुनेगा।
- कुंजी, अवधारणा समझ को सारांशित करने या सुदृढ़ करने में सहायता के लिए छात्र मौखिक प्रस्तुतियों का उपयोग करें।

स्पर्श सीखने वाले (Tactile learners) :– स्पर्श करने वाले शिक्षार्थी वस्तुओं को छूने या संभालने से सबसे अच्छा सीखते हैं। चौथी कक्षा तक, स्पर्श सीखने वाले सीखने की गतिविधियों की सराहना करते हैं जो लेखन सहित ठीक मोटर कौशल का उपयोग करते हैं। सीखने वालों को स्पर्श करने के लिए जोड़तोड़ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। उन्हें हाथों की गतिविधियों में भाग लेने, भूमिका निभाने और प्रदर्शन बनाने से भी लाभ होता है। स्पर्श करने वाले शिक्षार्थियों को याद रहता है कि उन्होंने क्या किया और कैसे किया यह जरूरी नहीं कि वे यह याद रखें कि उन्होंने दूसरों को क्या करते देखा या क्या सुना।

- कक्षा के लिए एक प्रक्रिया का प्रदर्शन करने के बाद, एक छात्र से प्रदर्शन को दोहराने के लिए कहें अन्य छात्रों को प्रदर्शनकर्ता को प्रशिक्षित करने की अनुमति दें।
- जब गतिविधियों में भूमिकाएं लेना शामिल हो, तब तक गतिविधि को तब तक दोहराएं जब तक कि प्रत्येक छात्र को प्रत्येक भूमिका निभाने का मौका न मिल जाए।

काइनेटिक शिक्षार्थी (Kinesthetic learners) – काइनेस्टेटिक शिक्षार्थी कक्षा निर्देश में सक्रिय भाग लेकर सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करते हैं। गति गति सहित गतिज सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो सीखने की प्रक्रिया के लिए विशिष्ट नहीं है। केवल छात्रों को कक्षा में घूमने की अनुमति देना गतिज शिक्षार्थियों के लिए विशेष रूप से सहायक हो सकता है। उदाहरण के लिए, किसी समस्या पर काम करने के लिए बोर्ड के पास चलना, चलने और लिखने के लिए आवश्यक गतियों को शामिल करता है।

- डिजाइन गतिविधियाँ जिनमें छात्रों को कमरे के भीतर एक स्टेशन से दूसरे स्थान पर जाने की आवश्यकता होती है।
- कुछ गतिविधियों के दौरान, छात्रों को कुछ संसाधनों का उपयोग करने के लिए कमरे में घूमने की अनुमति दें, उदाहरण के लिए, एक शब्दकोश, पेंसिल शार्पनर।
- छात्रों को असाइनमेंट पूरा करने के लिए कक्षा में उपलब्ध तकनीकी उपकरणों का उपयोग करने की अनुमति दें।

सामाजिक विविधता के प्रकार (Types of Social Diversity on the basis of)

भाषा : भाषा किसी भी समाज में सामूहिक एकता की प्रमुख निशानियों में से एक है।

धर्म: धर्म व्यक्तियों और समूहों के बीच सामाजिक एकीकरण की एक महत्वपूर्ण बाध्यकारी शक्ति है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

जातिः जाति सामाजिक संबंधों की एक प्रणाली है। यह भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो सजातीय विवाह, पदानुक्रम, व्यावसायिक संघ, शुद्धता और प्रदूषण, और अभिलेखीय स्थिति पर आधारित है।

जनजातिः भारत में जनजातीय लोग अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक समूह हैं

जेंडर : जेंडर स्त्री और पुरुष के बीच सामाजिक–जैविक अंतर का एक रूप है।

भारत विविधताओं का देश है। इसकी विविधता भाषा, धर्म, जाति, जनजाति और लिंग के संदर्भ में व्यक्त की जाती है। विविधता आंतरिक भेदभाव और बाहरी प्रभाव दोनों का परिणाम है। विभेदीकरण और एकीकरण की प्रक्रिया साथ–साथ चलती रही है। जिन समूहों को एक सामाजिक मार्कर पर विभेदित किया गया है उन्हें दूसरों पर एकजुट देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, जो समूह धार्मिक आधार पर विभाजित हैं जैसे कि हिंदू, मुस्लिम आदि भाषा, लिंग आदि के संदर्भ में एकजुट हैं। इस प्रकार भारतीय समाज में 'विविधता के बीच एकता' प्रचलित है। हालाँकि विविधता और एकता के बीच संतुलन नाजुक है और कई समस्याओं से भरा है। विभिन्न समूहों के बीच शक्ति संबंधों का विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

Unit :– 1.3 Disability as a human diversity (मानव विविधता के रूप में विकलांगता) – विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, 'विकलांगता' एक शब्द है, जिसमें हानि, गतिविधि सीमाएं और भागीदारी प्रतिबंध शामिल हैं। ''क्षति' शरीर के कार्य या संरचना में एक समस्या है, एक 'गतिविधि सीमा' किसी कार्य या क्रिया को निष्पादित करने में किसी व्यक्ति द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाई है, जबकि ''भागीदारी प्रतिबंध' एक व्यक्ति द्वारा जीवन स्थितियों में शामिल होने में अनुभव की जाने वाली समस्या है।

विकलांगता अधिकार आंदोलन में प्रमुख प्रवृत्तियों में से एक मानव विविधता के हिस्से के रूप में विकलांगता को देखने की दिशा में बदलाव है। पहले से कहीं अधिक, विकलांग लोग अपने अद्वितीय दृष्टिकोण और योगदान को समग्र रूप से समाज के साथ साझा करने के अवसरों का लाभ उठा रहे हैं।

कई संगठन विकलांग लोगों के लिए कार्यक्रमों को सुलभ बनाने की लागत के बारे में चिंतित हैं, इसलिए प्रत्येक परियोजना और प्रशासनिक बजट में एक ''विकलांग आवास'' लाइन आइटम शामिल करना यह सुनिश्चित करने का सबसे विश्वसनीय तरीका है कि संसाधन हाथ में हैं। वित्तीय संसाधनों का निवेश विविधता के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता के एक महत्वपूर्ण बेंचमार्क का प्रतिनिधित्व करता है।

फंडिंग की स्थापना के साथ, संगठन सकारात्मक और रचनात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने में सक्षम होंगे जब आउटरीच के प्रयासों का भुगतान होता है और एक उत्कृष्ट विकलांग प्रतिभागी, नौकरी आवेदक, या संभावित साथी दरवाजे पर दस्तक देता है। विकलांग लोगों को शामिल करके, अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर अपने कार्यक्रमों में विविधता ला सकते हैं और व्यापक आबादी को जीवन बदलने वाले अवसर प्रदान कर सकते हैं। दुनिया को अपने सभी नागरिकों को शामिल करने की जरूरत है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

विकलांगता समुदाय के साथ बातचीत करने और उसमें शामिल होने के कई तरीके हैं। जबकि विकलांगता के कई मॉडल हैं, इक्विटी को आगे बढ़ाने और समावेशन के लिए विशेष रूप से यह आवश्यक है कि हम विकलांगता के सामाजिक और मानवाधिकार मॉडल पर विचार करें और उनका उपयोग करें।

सामाजिक मॉडल – यह मॉडल ''प्रस्तावित करता है कि जो चीज किसी को विकलांग बनाती है, वह उनकी चिकित्सा स्थिति नहीं है, बल्कि समाज का दृष्टिकोण और संरचना है। यह विकलांगता के लिए एक नागरिक अधिकार दृष्टिकोण है। यदि आधुनिक जीवन को इस तरह से स्थापित किया गया था जो लोगों के लिए सुलभ था विकलांग तो उन्हें बहिष्कृत या प्रतिबंधित नहीं किया जाएगा।''

मानवाधिकार मॉडल – बुनियादी मानवाधिकार सिद्धांतों के आधार पर, ''यह मानता है कि विकलांगता मानव विविधता का एक स्वाभाविक हिस्सा है जिसका सभी रूपों में सम्मान और समर्थन किया जाना चाहिए। विकलांग लोगों के पास समाज में हर किसी के समान अधिकार हैं,'' और विकलांगता ''लोगों के अधिकारों को नकारने या प्रतिबंधित करने के बहाने के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।''

दोनों मॉडलों का उपयोग करके, हम विकलांग लोगों को सही ढंग से देखना शुरू कर सकते हैं: मानव के रूप में। हम इस बात पर विचार करना शुरू कर सकते हैं कि समाज की पहुंच सुनिश्चित करके हम विकलांग व्यक्तियों के लिए बेहतर सहयोगी कैसे बन सकते हैं। शायद आप किसी विकलांग व्यक्ति की निगरानी करते हैं और नोटिस करते हैं कि उनके उपकरण उनकी जरूरतों को पूरा नहीं कर रहे हैं। आपको उस व्यक्ति से पूछना चाहिए कि वे किन बाधाओं का सामना कर रहे हैं और उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए उनके साथ काम करना चाहिए। सामाजिक मॉडल ''खविकलांगता, की वास्तविकता से इनकार नहीं करता है और न ही व्यक्ति पर इसके प्रभाव को। हालांकि, यह मानव विविधता की एक अपेक्षित घटना के रूप में हानि को समायोजित करने के लिए भौतिक, दृष्टिकोण, संचार और सामाजिक वातावरण को चुनौती देता है,''

हम में से प्रत्येक मानवाधिकार मॉडल को इस रूप में देख सकता है कि हम विकलांग लोगों के साथ कैसे बातचीत करते हैं और उन्हें कैसे देखते हैं। मानवाधिकार मॉडल में, हम लोगों के साथ उनके मूल मानवाधिकारों के साथ व्यवहार करते हैं। इसमें ''समानता और निष्पक्षता से संबंधित सिद्धांतों का एक सेट शामिल है। भय, उत्पीड़न या भेदभाव से मुक्त जीवन जीना।'' विकलांग व्यक्तियों को विविधता के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में पहचाना और सम्मानित किया जाता है। हर किसी की कई परतें होती हैं कि वे कौन हैं। एक व्यक्ति पूरी तरह से उनकी अक्षमता से परिभाषित नहीं होता है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी नीतियां और प्रथाएं मानवाधिकार मॉडल का समर्थन करती हैं और विकलांग व्यक्तियों के लिए पूर्ण समावेश और भागीदारी को प्रोत्साहित करती हैं।

सामाजिक और मानवाधिकार मॉडल का अभ्यास विकलांग लोगों के बीच इलाज की संभावित इच्छा को रोकता नहीं है। इस प्रकार की इच्छाएं और निर्णय प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत और अद्वितीय होते हैं, और उन्हें यह तय नहीं करना चाहिए कि हम, या समाज, इस समुदाय के साथ कैसे बातचीत करते हैं। जबकि एनआईएच कर्मचारी अक्सर अनुसंधान करने के लिए विकलांगता के चिकित्सा मॉडल का उपयोग कर सकते हैं, सामाजिक और मानवाधिकार मॉडल आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं और हमेशा बातचीत का

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

हिस्सा होना चाहिए। समाज को हमेशा विकलांग लोगों की कल्पना करने और उन्हें इंसानों के रूप में व्यवहार करने के लिए काम करना चाहिए – सम्मान और सम्मान के साथ।

Unit :– 1.4 Diversity for sustainability (स्थिरता के लिए विविधता)

शब्द ''स्थिरता'' जटिल हो सकता है और अलग–अलग अर्थ ले सकता है। स्थिरता की सबसे आम परिभाषा 1987 संयुक्त राष्ट्र ब्रंटलैंड आयोग से आती है:।''विकास जो वर्तमान पीढ़ियों की जरूरतों को भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना पूरा करता है।''स्थिरता के लिए विविधता क्यों महत्वपूर्ण है, इसके तीन कारण हैं:

स्थिरता की परिभाषा में विविधता अंतर्निहित है

स्थिरता वैश्विक और स्थानीय दोनों तरह से है पर्यावरणीय प्रभाव कार्बन पदचिह्न के रूप में वैश्विक हैं और हमारे पड़ोस में कूड़े के रूप में स्थानीय हैं। आज के कारोबार के बारे में जितना सोचते हैं, वैसे–वैसे तस्वीर में विविधता आने के कई तरीके हैं। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के पदचिह्न से लेकर दुनिया भर के समुदायों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के स्थानों तक, कंपनियां आंतरिक रूप से उन लोगों से जुड़ी हुई हैं जिन्हें वे नियोजित करते हैं और जिन स्थानों पर वे काम करते हैं।

पर्यावरणीय न्याय और स्थिरता पर्यावरणीय प्रभावों से जुड़ी लागत और लाभ हमेशा लोगों के बीच समान रूप से वितरित नहीं होते हैं। राष्ट्रीय संसाधन रक्षा परिषद के अनुसार, अमेरिका के सबसे प्रदूषित वातावरण में रहने, काम करने और खेलने वाले लोग आमतौर पर रंग और वंचित समुदायों के लोग होते हैं। व्यवसायों का यह कर्तव्य है कि वे समुदायों के बीच संसाधनों – और पर्यावरणीय प्रभावों – को कैसे साझा किया जाए, इसके पुनर्निर्माण में मदद करें।

विविधता कई दृष्टिकोणों में मूल्य जोड़ती है (Diversity adds value across multiple perspectives) – विविध आवाजों और विचारों में ताकत कार्यस्थल में जितना अधिक प्रतिनिधित्व, समावेश और जुड़ाव होगा, परिणाम उतने ही मजबूत होंगे। जैसे–जैसे वैश्विक व्यवसायों के लिए विविध हितधारकों की संख्या बढ़ती है, वैसे–वैसे उनकी कॉर्पोरेट जिम्मेदारी टीम को भी इन विविध दृष्टिकोणों को ध्यान में रखने और शामिल करने की आवश्यकता होती है। विविधता सहयोग को समृद्ध करती है –

समुदायों की बेहतर सेवा के लिए निगम, गैर–लाभकारी संस्थाएं और व्यक्ति भागीदार हो सकते हैं। जब राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय प्रगति रुक जाती है, तो सभी क्षेत्रों में रचनात्मक और समर्पित भागीदारी शून्य को भरने के लिए कदम उठा सकती है। विभिन्न संगठनों और व्यक्तियों की राय, दृष्टिकोण और लक्ष्यों में विविधता को एक साथ लाने से स्थानीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर विभाजन को पाटने में मदद मिल सकती है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

Unit :– 1.5 Strength of diversity for inclusivity (समावेशिता के लिए विविधता की ताकत) – विविधता एक समूह या संगठन में विभिन्न पृष्ठभूमि, विशेषताओं और अनुभवों वाले व्यक्तियों की उपस्थिति को संदर्भित करती है। इसमें नस्ल, जातीयता, लिंग, आयु, धर्म, यौन अभिविन्यास, सामाजिक–आर्थिक स्थिति और अन्य में अंतर शामिल हो सकते हैं। इसके विपरीत, समावेशिता का तात्पर्य एक ऐसा वातावरण बनाने से है जो विविधता को गले लगाता है और महत्व देता है और यह सुनिश्चित करता है कि हर कोई स्वागत योग्य, सम्मानित और मूल्यवान महसूस करे।

समावेशिता के लिए विविधता की ताकत का एक उदाहरण कार्यस्थल में है। जब कंपनियां विविधता और समावेशिता को प्राथमिकता देती हैं, तो वे प्रतिभा की एक विस्तृत श्रृंखला को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होती हैं। अलग–अलग पृष्ठभूमि और अलग–अलग दृष्टिकोण से व्यक्तियों को काम पर रखने से, कंपनियां अपने विविध ग्राहकों और ग्राहकों को बेहतर ढंग से समझ सकती हैं और उनकी सेवा कर सकती हैं। वे एक विविध टीम की रचनात्मकता और अंतर्दृष्टि का दोहन करके जटिल समस्याओं के लिए अधिक नवीन और प्रभावी समाधान भी विकसित कर सकते हैं।

एक और उदाहरण शिक्षा में है। जब स्कूल विविधता को अपनाते हैं और एक समावेशी वातावरण बनाते हैं, तो वे एक विविध छात्र निकाय की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा कर सकते हैं। विभिन्न संस्कृतियों और दृष्टिकोणों का मूल्यांकन और सम्मान करके, स्कूल एक सुरक्षित और स्वागत योग्य वातावरण बना सकते हैं जहाँ सभी छात्रों को लगता है कि वे संबंधित हैं। इससे बेहतर शैक्षणिक परिणाम, छात्रों की व्यस्तता में वृद्धि, और अनुपस्थिति और अनुशासनात्मक मुद्दों की कम दर हो सकती है।

उदाहरण के लिए, नेशनल एजुकेशन एसोसिएशन के एक अध्ययन में पाया गया कि जो छात्र समावेशी नीतियों और प्रथाओं के साथ स्कूलों में जाते हैं, वे अधिक सहज महसूस करते हैं, सीखने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं, और डराने–धमकाने या भेदभाव का अनुभव करने की संभावना कम होती है। इसके अलावा, अध्ययनों में पाया गया है कि विविध कक्षाएँ महत्वपूर्ण सोच और समस्या को सुलझाने के कौशल में सुधार कर सकती हैं, क्योंकि छात्र समस्या–समाधान के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों और दृष्टिकोणों पर विचार करना सीखते हैं।

संक्षेप में, विविधता की ताकत समावेशिता को बढ़ावा देने और वातावरण बनाने की क्षमता में निहित है जहां सभी व्यक्ति स्वागत, सम्मान और मूल्यवान महसूस करते हैं। चाहे कार्यस्थल, शिक्षा, या अन्य सेटिंग्स में, विविधता को महत्व देने और समावेशिता को बढ़ावा देने से कई प्रकार के लाभ हो सकते हैं, जिसमें अधिक नवाचार, बेहतर निर्णय लेने, बेहतर शैक्षणिक परिणाम और शामिल सभी व्यक्तियों के लिए जुड़ाव और भलाई शामिल है।

मॉडल समावेशी भाषा – एक सम्मानजनक, समावेशी वातावरण विकसित करने के एक तत्व के रूप में, प्रशिक्षकों को उनके द्वारा मॉडल की जाने वाली भाषा प्रथाओं के बारे में पता हो सकता है। सामान्य

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

लाभकारी प्रथाओं में शामिल हैंः पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए पुल्लिंग सर्वनाम का उपयोग करने से बचेंय अमेरिकी मुहावरों का उपयोग करते समय, गैर–देशी अंग्रेजी बोलने वालों के लाभ के लिए उन्हें समझाएंय और यूरोपीय या यूरोपीय अमेरिकी महिलाओं के लिए ''महिला'' या विषमलैंगिक व्यक्तियों के लिए ''सभी महिलाएं ६ पुरुष'' जैसे झूठे समावेशी शब्दों या बयानों का उपयोग करने से बचें। इस रणनीति के लिए, प्रशिक्षक विभिन्न प्रकार की सामाजिक विशेषताओं, जैसे कि नस्ल या लिंग को शामिल करने के लिए उपयोग किए जाने वाले ठोस उदाहरणों और केस स्टडीज को बदल सकते हैं।

कई और विविध उदाहरणों का उपयोग करें – ऊपर दिए गए विभिन्न उदाहरणों के विचार पर विस्तार करते हुए, प्रशिक्षक व्याख्यान में जितना संभव हो सके बहुसांस्कृतिक उदाहरण, दृश्य और सामग्री शामिल कर सकते हैं। इनमें पाठ्यक्रम पर , कक्षा चर्चा में , और जब भी संभव हो, सत्रीय कार्य में अनेक दृष्टिकोण शामिल होने चाहिए । यदि पाठ्यक्रम सामग्री या उदाहरण शामिल हैं जो एक समूह को एक उत्पीड़ित पीड़ित की स्थिति में रखते हैं, तो प्रशिक्षकों को संतुलन के लिए सशक्तिकरण के उदाहरण प्रदान करना सुनिश्चित करना चाहिए। कई दृष्टिकोणों को शामिल करने के अन्य तरीकों में डेविल्स एडवोकेट की भूमिका निभाना, किसी पाठ की संभावित व्याख्याओं के बारे में बहस में शामिल होना और प्रासंगिक अल्पसंख्यक विद्वानों का काम सौंपना शामिल है।

छात्रों के साथ व्यक्तिगत रूप से जुड़ें – प्रशिक्षक सभी छात्रों का स्वागत करने और खुलेपन और ईमानदारी के मॉडल के रूप में पाठ्यक्रम में विविधता कथन या शिक्षण दर्शन कथन का उपयोग कर सकते हैं। इस नीति का विस्तार करते हुए, जब भी उपयुक्त हो, प्रशिक्षकों को व्यक्तिगत सीखने के अनुभवों और चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए स्वतंत्र महसूस करना चाहिए – अध्ययनों से पता चलता है कि छात्र मेटा–संज्ञानात्मक क्षणों की सराहना करते हैं और सीखते हैं जहां वे अपनी या अन्य लोगों की सोच पर प्रतिबिंबित कर सकते हैं। जहां उपयुक्त हो, प्रशिक्षक छात्रों को बातचीत के लिए सेमेस्टर के दौरान आमने–सामने मिलने के लिए प्रोत्साहित भी कर सकते हैं। .

भागीदारी के लिए वैकल्पिक साधन प्रदान करें – कक्षा में विभिन्न भावनात्मक और सामाजिक स्थितियों के बारे में जागरूकता का संकेत देने के लिए, प्रशिक्षकों को कक्षा के अलावा ऑनलाइन चर्चा के माध्यम से छात्रों की भागीदारी के अवसरों की अनुमति देनी चाहिए। प्रशिक्षक जर्नल प्रविष्टियां, रीडिंग लॉग्स या अन्य प्रतिबिंब टुकड़े भी एकत्र कर सकते हैं, और पूरी अवधि के लिए एक समरूप रणनीति से बचना चाहिए।

छात्रों के साथ सम्मानपूर्वक संवाद करें – प्रशिक्षकों को छात्रों के नामों का सही और उचित क्रम में उच्चारण करने का ध्यान रखना चाहिएः इसमें किसी छात्र के नाम को उसकी स्पष्ट स्वीकृति के बिना छोटा या सरल नहीं करना शामिल हैय यह जानते हुए कि कुछ जातियां अपने दिए गए और परिवार के नामों को विभिन्न क्रमों में व्यवस्थित कर सकती हैंय छात्रों से उनके पसंदीदा लिंग सर्वनाम के लिए पूछना, और इसके बजाय बहुवचनों का उपयोग करके लिंग बायनेरिज से बचना, जैसे कि उसके बजाय ''वे'' और सांस्कृतिक पहचान के लिए समकालीन शब्दों से अवगत होना। यदि उचित पते या पहचान के सांस्कृतिक रूप के बारे में अनिश्चित है, तो प्रशिक्षक गैर–खतरनाक संदर्भ में पूछ सकता है। इसके विपरीत, प्रशिक्षकों को किसी भी छात्र को अपने कथित समूह के लिए एक प्रतिनिधि प्रवक्ता होने के लिए नहीं कहना चाहिए, या नस्ल, वर्ग, लिंग आदि के मुद्दों पर चर्चा करते समय इन्हीं छात्रों को ध्यान से या दूर से देखना चाहिए। न ही उन्हें

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

छात्रों से पूछना चाहिए और न ही उनसे अपेक्षा करनी चाहिए। अपनी जातीय विरासत, इतिहास, भाषा, या संस्कृति के बारे में जानकार होने के लिए जब तक कि वे ऐसी जानकारी स्वेच्छा से नहीं देते।

आपत्तिजनक, भेदभावपूर्ण और असंवेदनशील टिप्पणियों को संबोधित करें – एक समावेशी कक्षा के माहौल के हिस्से के रूप में, प्रशिक्षकों को सभी छात्रों की ईमानदार अभिव्यक्तियों और विचारों का सम्मान करना चाहिए। यदि किसी छात्र की प्रतिक्रिया विषय में भावनात्मक निवेश को इंगित करती है, तो प्रशिक्षकों को अन्य छात्रों को उनके योगदान को ''तर्कहीन'' या ''अविद्यापूर्ण'' प्रतिक्रियाओं के रूप में खारिज नहीं करने देना चाहिए, इसके बजाय, वे खुले तौर पर आपत्तिजनक और भेदभावपूर्ण टिप्पणियों को संबोधित कर सकते हैं और छात्रों को उनके व्यवहार के लिए जवाबदेह ठहरा सकते हैं।

एक स्व–मूल्यांकन करें – प्रशिक्षक आदतों और कक्षा प्रथाओं का आकलन करने, दृष्टिकोणों में अंतराल को प्रकट करने और संशोधन के लिए रणनीतियों पर विचार करने के लिए किसी भी संख्या में शिक्षण सूची का पता लगा सकते हैं। इस पृष्ठ के निचले भाग में ''डाउनलोड'' अनुभाग में पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम डिजाइन में समावेशीता की डिग्री पर विचार करने के लिए एक मूल्यांकन शामिल है।

Unit :– 2 Concept and Meaning of Inclusive Education (समावेशी शिक्षा की अवधारणा और अर्थ)

Unit :– 2.1 Meaning and defining inclusion (समावेशन का अर्थ और परिभाषित करना) – समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा होती है जिसमें सामान्य बालक–बालिकाएं और मानसिक तथा शारीरिक रूप से बाधित बालक एवं बालिकाओं सभी एक साथ बैठकर एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं। समावेशी शिक्षा सभी नागरिकों समानता के अधिकार की बात करता है और इसीलिए इसके सभी शैक्षिक कार्यक्रम इसी प्रकार के तय किए जाते हैं ऐसे संस्थानों में विशिष्ट बालकों के अनुरूप प्रभावशाली वातावरण तैयार किया जाता है और नियमों में कुछ छूट भी दी जाती है जिससे कि विशिष्ट बालकों को समावेशी शिक्षा के द्वारा सामान्य विद्यालयों में सामान्य बालकों के साथ कुछ अधिक सहायता प्रदान करने की कोशिश की जाती है।

समावेशी शिक्षा का अर्थ (Inclusive Education Meaning) – समावेशी शिक्षा को अंग्रेजी में inclusive education कहा जाता है जिसका अर्थ होता है सामान्य तथा विशिष्ट बालक बिना किसी भेदभाव के एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करना।

समावेशी शिक्षा की परिभाषा (Inclusive Education Definition) –

स्टीफन एवं ब्लैकहर्ट के अनुसार :– ''शिक्षा के मुख्य धारा का अर्थ बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है या समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपयुक्त सामाजिक मानवीकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है।''

यरशेल के अनुसार :– ''समावेशी शिक्षा के कुछ कारण योग्यता लिंग, प्रजाति, जाति, भाषा, चिंता का स्तर, सामाजिक और आर्थिक स्तर विकलांगता व्यवहार या धर्म से संबंधित होते हैं।

शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार :– " समावेशी शिक्षा अधिगम के ही नहीं बल्कि विशिष्ट अधिगम के नए आयाम खुलती है।"

Unit :– **2.2 Principles of Inclusion (समावेश के सिद्धांत)** – समावेश के सिद्धांत समानता, पहुंच, अवसर और बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देते हैं और शिक्षा और देखभाल में विकलांग छात्र और कम करने में योगदान करते हैं। उनके साथ भेदभाव। वे बचपन की शिक्षा और देखभाल केंद्र प्रदान करते हैं। (प्रारंभिक बचपन) और स्कूल, साथ ही साथ प्रारंभिक बचपन और स्कूल क्षेत्र, व्यापक . के साथ और उनकी प्रगति का आकलन करने के लिए समावेश के लिए सुसंगत मानदंड।

सीखने के कार्यक्रम की डिलीवरी अनजाने में कई बाधाओं को प्रस्तुत कर सकती है।सीखने या मूल्यांकन जो कुछ छात्रों को दूसरों की तुलना में अधिक प्रभावित करता है और इसके परिणामस्वरूप हो सकता है छात्रों का गलत तरीके से शोषण किया जा रहा है।

समावेशी अभ्यास का उद्देश्य इन बाधाओं को कम करना या हटाना और की सफलता का समर्थन करना है। सभी छात्र यह सुनिश्चित करते हुए कि शैक्षणिक मानकों से समझौता नहीं किया जाता है। एक समावेशी सीखने के लिए वातावरण शिक्षार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं का अनुमान लगाता है और इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि समावेशी डिजाइन के माध्यम से सभी छात्रों को शैक्षिक अवसरों तक समान पहुंच प्राप्त है।

सिद्धांतों का उद्देश्य :–

- शिक्षा और देखभाल में अक्षमता के साथ बच्चों और छात्रों के समानता, पहुंच, अवसर और अधिकारों को बढ़ावा देना।
- विकलांग बच्चों और छात्रों के खिलाफ भेदभाव को कम करने में योगदान करते हैं, जहां उनके साथ उनके साथियों की तुलना में कम उचित व्यवहार किया जाता है।
- प्रारंभिक बचपन की शिक्षा और देखभाल केंद्र (प्रारंभिक बचपन) और स्कूलों को समावेश के लिए व्यापक और सुसंगत मानदंड प्रदान करें ताकि वे समावेश की दिशा में अपनी प्रगति का आकलन कर सकें।
- समावेश की दिशा में उनकी प्रगति का आकलन करने के लिए प्रारंभिक बचपन और स्कूली क्षेत्रों को व्यापक और सुसंगत मानदंड प्रदान करना।

एक्सेस :– एक्सेसिबिलिटी का तात्पर्य मानव क्षमता और अनुभव की परवाह किए बिना सभी को समान पहुंच प्रदान करना है। यह संदर्भित करता है कि कैसे संगठन उन विशेषताओं और प्रतिभाओं को शामिल करते हैं और मनाते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति संगठन में लाता है। यह सभी के लिए प्रतिनिधित्व के बारे में है। सभी अवसरों तक पहुंच प्रदान करके, हम प्रतिभा के अविश्वसनीय पूल का उपयोग करने में सक्षम होंगे जो इसके सदस्य संगठन में लाते हैं। यह वास्तविक और कथित बाधाओं को खत्म कर देगा और प्रतिभा को विकसित और आगे बढ़ाएगा।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

इक्विटी :– इक्विटी एक दृष्टिकोण को संदर्भित करता है जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी के पास समान अवसरों तक पहुंच हो। यह मानता है कि फायदे और बाधाएं मौजूद हैं और इसके परिणामस्वरूप, हर कोई एक ही जगह से शुरू नहीं होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो उस असमान प्रारंभिक स्थान को स्वीकार करके शुरू होती है और असंतुलन को ठीक करने और संबोधित करने के लिए काम करती है। इक्विटी सुनिश्चित करती है कि सभी लोगों को उनकी पहचान की परवाह किए बिना बढ़ने, योगदान करने और विकसित करने का अवसर मिले। मूल रूप से, यह एक समुदाय के सभी सदस्यों के साथ उचित और न्यायसंगत व्यवहार है। इसमें निर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में चल रही कार्रवाई और प्रगति के आकलन के साथ रणनीतिक प्राथमिकताओं, संसाधनों, सम्मान और सभ्यता पर प्रतिबद्धता और जानबूझकर ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रासंगिकता (Relevance) :– विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समग्र शैक्षिक विकास के लिए प्रासंगिकता के कारण संपूर्ण विश्व में समावेशी शिक्षा के विकास की दिशा में एक नया रुझान है। समावेशी शिक्षा गैर–विकलांग बच्चों के साथ नियमित कक्षाओं में बच्चों को यथासंभव पूर्ण रूप से पढ़ाने का अभ्यास है। ऐसे बच्चों में हड्डी रोग , बौद्धिक , भावनात्मक , देखने में कठिनाई या सुनने में बाधा हो सकती है। समावेशी शिक्षा पिछले दशकों में बढ़ती रुचि की रही है। अनुसंधान दिखा रहा है कि कई विकलांग छात्र विशेष कक्षाओं की तुलना में नियमित रूप से बेहतर सीखते हैं। विशेष शिक्षा वर्गों में नस्लीय असंतुलन मौजूद था।

भागीदारी (Participation) :– भागीदारी और समावेश के सिद्धांत का उद्देश्य विकलांग व्यक्तियों को व्यापक समाज में शामिल करना और उन्हें प्रभावित करने वाले निर्णय लेने में, उन्हें अपने जीवन में और समुदाय के भीतर सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित करना है। समावेश एक दोतरफा प्रक्रिया है, जिन व्यक्तियों को कोई विकलांग नहीं है उन्हें विकलांग व्यक्तियों की भागीदारी के लिए खुला होना चाहिए।

अभिगम्यता (Accessibility) :– अभिगम्यता के सिद्धांत का उद्देश्य उन बाधाओं को दूर करना है जो विकलांग व्यक्तियों द्वारा अधिकारों के आनंद में बाधा डालती हैं। यह मुद्दा न केवल स्थानों तक भौतिक पहुंच से संबंधित है, बल्कि सूचना, प्रौद्योगिकी, जैसे इंटरनेट, संचार, और आर्थिक और सामाजिक जीवन तक पहुंच से भी संबंधित है। रैंप का प्रावधान, पर्याप्त रूप से बड़े और अनब्लॉक कॉरिडोर और दरवाजे, दरवाजे के हैंडल की नियुक्ति, ब्रेल में जानकारी की उपलब्धता और आसानी से पढ़े जाने वाले प्रारूप, साइन इंटरप्रिटेशन, दुभाषियों का उपयोग और सहायता और समर्थन की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकते हैं। विकलांग व्यक्ति के पास कार्यस्थल, मनोरंजन की जगह, मतदान केंद्र, परिवहन, अदालत आदि तक पहुंच है। जानकारी या स्वतंत्र रूप से चलने की क्षमता के बिना, विकलांग व्यक्तियों के अन्य अधिकार भी प्रतिबंधित हैं।

सशक्तिकरण (Empowerment) :– लोग तभी सशक्त होते हैं जब वे अपने अधिकारों का दावा करने और अपने जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों, नीतियों, नियमों और शर्तों को आकार देने में सक्षम होते हैं। विकास के लिए एक दृष्टिकोण जो मानव अधिकारों पर आधारित है, सभी को अपने स्वयं के विकास के एजेंट के रूप में मानता है। सशक्तिकरण के लिए ऐसे सुरक्षित स्थान खोलने की आवश्यकता होती है जो परंपरागत रूप से हाशिए पर रहने वाले लोगों सहित सभी लोगों को मेज पर जगह देने के लिए सक्षम

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

बनाता है, और उन निर्णयों, नीतियों, नियमों और शर्तों को आकार देने में भाग लेता है जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं।

Unit :– 2.3 Integration vs- Inclusive education (एकीकरण बनाम समावेशी शिक्षा)

एकीकृत शिक्षा – कई छात्र शारीरिक तथा मानसिक रूप से असक्षम होते हैं। इस वजह से ऐसे छात्रों को सामान्य छात्रों की तरह शिक्षा का बराबर अधिकार नहीं मिलता। ऐसे बच्चे समाज में अलग–थलग महसूस करते हैं जिस वजह से उनमें हीनता की भावना पैदा होने लगती है। भेदभाव की वजह से यह छात्र, सामान्य छात्रों से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते। इसी भेदभाव को समाप्त करने के लिए और हीन भावना को दूर करने के लिए एकीकृत शिक्षा प्रणाली सामने आई।

इस शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को, सामान्य छात्रों के साथ मुख्यधारा के स्कूलों में शिक्षा दी जाती है यानी कि यदि कोई छात्र सामान्य बच्चों के साथ मुख्यधारा के स्कूलों में पढ़ने की इच्छा जाहिर करता है तो उसे पढ़ने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस तरह की शिक्षा प्रणाली का मुख्य मकसद होता है, सामान्य छात्रों और विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के मध्य भेदभाव को खत्म करना तथा उन्हें पढ़ाई का समान अवसर प्रदान करना। भारतीय संविधान देश के सभी नागरिकों को समानता का अधिकार देता है। एकीकृत शिक्षा प्रणाली में, समानता के अधिकार को ध्यान में रखते हुए सभी छात्रों को एक समान मानकर उन्हें एक जैसी शिक्षा दी जाती है।

हालांकि, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को प्रभावी शिक्षा प्रदान करने लिए तथा उन्हें अन्य समस्याओं से बचाने के लिए स्कूल में विशेष तरह की व्यवस्था या बनावट की जानी जरूरी होती है कि ऐसे छात्रों को कोई दिक्कत का सामना न करना पड़े। लेकिन आज कल के इन स्कूलों में, स्कूल की बनावट और व्यवस्था में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जाता क्योंकि यह स्कूल सिर्फ सामान्य छात्रों की आवश्यकता के मुताबिक बनाए जाते हैं, जिससे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को दिक्कत होती है।

विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को पढ़ाने और समझाने के लिए विशेष प्रशिक्षण की जरूरत होती है। यह प्रशिक्षण, प्रशिक्षित शिक्षक ही दे सकते हैं। लेकिन इन स्कूलों में प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था नहीं होती। इनमें स्कूल के ही शिक्षकों को थोड़ा बहुत प्रशिक्षण दे दिया जाता है जिस वजह से विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को पढ़ने में बाधा का सामना करना पड़ता है।

इसके साथ ही स्कूल में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम में भी विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को ध्यान में रखकर कोई बदलाव नहीं किया जाता। स्कूल का वातावरण भी सामान्य छात्रों के मुताबिक होता है जिस वजह से इस प्रणाली का ज्यादा फायदा विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को नहीं मिल पाता।

एकीकृत शिक्षा की विशेषताएं –

- इस शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य है विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को, सामान्य छात्रों की तरह ही समान अवसर प्रदान करना।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- विशेष आवश्यकता वाले छात्र बिना किसी भेदभाव के शिक्षा हासिल कर सकें, और उनमें हीनता की भावना खत्म हो सके।
- इस तरह की शिक्षा प्रणाली से विकलांग और अपंग छात्रों का मनोवैज्ञानिक तौर पर मनोबल बढ़ता है।
- एकीकृत शिक्षा में लागत कम लगती है क्योंकि इस तरह की शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए किसी भी तरह की व्यवस्था पर खर्च नहीं किया जाता।
- इससे विशेष आवश्यकता वाले छात्र आत्मनिर्भर बनते हैं।
- इस तरह की शिक्षा प्रत्येक छात्र के शिक्षा के अधिकार को पुष्टता प्रदान करता है। साथ ही भारतीय संविधान के समानता के अधिकार का भी अनुपालन करता है।

समावेशी शिक्षा – एक तरह से कहा जाए तो समावेशी शिक्षा, एकीकृत शिक्षा का ही विस्तारित रूप है। एकीकृत शिक्षा की तरह ही समावेशी शिक्षा में एक सामान्य छात्र और एक दिव्यांग छात्र को एक साथ, एक ही विद्यालय के, एक ही कक्षा में शिक्षा दी जाती है। लेकिन जहां एकीकृत शिक्षा में सामान्य आवश्यकता वाले छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षित शिक्षक, स्कूल की व्यवस्था और पाठ्यक्रम की व्यवस्था नहीं होती वहीं समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विशेष प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, स्कूल की व्यवस्था जैसी तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। इस तरह की शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को विद्यालय में ही बेहतर शिक्षा, बेहतर वातावरण और सुख सुविधाएं प्रदान की जाती है। सुख सुविधाओं से तात्पर्य है इन स्कूलों की बनावट और वातावरण को ऐसा बनाया जाता है जिससे अपंग छात्र खुद को सामान्य छात्रों से कमतर न समझे।

इस तरह की शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को विद्यालय में ही बेहतर शिक्षा, बेहतर वातावरण और सुख सुविधाएं प्रदान की जाती है। सुख सुविधाओं से तात्पर्य है इन स्कूलों की बनावट और वातावरण को ऐसा बनाया जाता है जिससे अपंग छात्र खुद को सामान्य छात्रों से कमतर न समझे।

इन स्कूलों में प्रशिक्षित शिक्षकों के साथ ही मनोवैज्ञानिक और डॉक्टर की व्यवस्था की जाती है जिससे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को यदि किसी भी तरह की आवश्यकता पड़े तो उन्हें समय रहते मदद मिल सके। एकीकृत शिक्षा के मुकाबले समावेशी शिक्षा ज्यादा बेहतर मानी जाती है क्योंकि इस तरह के शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की जरूरतों और आवश्यकताओं को महत्व दिया जाता है।

समावेशी शिक्षा की विशेषताएं –

1.इस तरह की शिक्षा ज्यादा महंगी होती है क्योंकि इसमें शिक्षण के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों, डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक आदि को रखा जाता है। इसके साथ ही स्कूल की बनावट और वातावरण को ऐसा बनाया जाता है जिससे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को मुश्किलें न आए।

2.समावेशी शिक्षा में सभी छात्रों को भागीदारी का समान अवसर मिलता है।

3.शिक्षा के अंतर्गत सभी छात्रों को समान माना जाता है तथा उन्हें समान शिक्षा और सुविधाएं प्रदान की जाती है। यह सामाजिक एकीकरण के साथ शैक्षणिक एकीकरण को सुनिश्चित करता है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

4.इस तरह की शिक्षा से विशिष्ट आवश्यकता वाले छात्रों में हीनता की भावना खत्म होती है।

5.समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को स्वीकार किया जाता है तथा उनको विकास के लिए समान अवसर दिए जाते हैं। इस तरह की शिक्षा में शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर दिया जाता है।

एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा में अंतर –

1.एकीकृत शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को सिर्फ सामान्य छात्रों के साथ पढ़ने–लिखने की अनुमति दी जाती है। जबकि समावेशी शिक्षा में आपस में पढ़ने की अनुमति के साथ–साथ विशेष सुविधाएं भी मुहैया करवाई जाती हैं।

2.एकीकृत शिक्षा प्रणाली में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में कोई बदलाव नहीं किया जाता। वहीं समावेशी शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम में बदलाव किया जाता है, जिससे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को तो मदद मिले ही, साथ ही सामान्य छात्रों को भी कोई नुकसान न हो।

3.जहां एकीकृत शिक्षा, शिक्षक केंद्रित होती है। वही समावेशी शिक्षा छात्र केंद्रित होती है।

4.एकीकृत शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षक नहीं होते, बल्कि वहां के शिक्षकों को ऊपरी तौर पर प्रशिक्षित करके विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को पढ़ाने के लिए कहा जाता है। लेकिन समावेशी शिक्षा में विशेष शिक्षा प्राप्त प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था की जाती है।

5.एकीकृत शिक्षा के तहत विश्वविद्यालयों की बनावट और आधारभूत संरचना विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के अनुकूल नहीं होती। लेकिन समावेशी शिक्षा में विद्यालय की बनावट और आधारभूत संरचना को विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के मुताबिक बनाया जाता है।

6.एकीकृत शिक्षा में डॉक्टर व मनोवैज्ञानिक की व्यवस्था नहीं होती लेकिन समावेशी शिक्षा में होती है।

7.विशेष आवश्यकता वाले छात्रों पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत होती है। लेकिन एकीकृत शिक्षा व्यवस्था में उनके लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की जाती। परंतु समावेशी शिक्षा प्रणाली में छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है।

8.एकीकृत शिक्षा व्यवस्था में प्रशिक्षित शिक्षक न होने की वजह से छात्र प्रभावी शिक्षा हासिल नहीं कर पाते। लेकिन समावेशी शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा उन्हें प्रभावी शिक्षा दी जाती है।

9.एकीकृत शिक्षा का प्रावधान करने वाले स्कूलों में स्कूल की बनावट छात्रों के अनुकूल नहीं होती जिससे उन्हें कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन समावेशी शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों में इन छात्रों के अनुकूल व्यवस्था की जाती है।

10.एकीकृत शिक्षा में ज्यादा लागत नहीं लगती। लेकिन समावेशी शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों, डॉक्टर, मनोवैज्ञानिक, स्कूल की बनावट आदि पर काफी पैसा लगता है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

Unit :– 2.4 Barriers and facilitators of inclusive education (समावेशी शिक्षा की बाधाएं और सुविधाकर्ता) – समावेशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति (उम्र, विकलांगता, लिंग, धर्म, यौन वरीयता या राष्ट्रीयता पर ध्यान दिए बिना) जो किसी गतिविधि या सेवा के सभी पहलुओं में पूरी तरह से पहुंच और भाग ले सकता है, उसी तरह से किसी अन्य सदस्य की तरह।

समावेशन एक व्यक्ति को संबोधित करता हैः

- गरिमा dignity (मूल मानव अधिकार)
- अवसर (समान रोजगार और दृष्टिकोण)
- आवास (पहुंच, सहायक उपकरण)।

समावेश समाज में अंतर को समायोजित करने और भेदभाव का मुकाबला करने के लिए बदलने के बारे में है।

Barriers to inclusion (शामिल करने में बाधाएं) :– बाधाओं के तीन सेट हैं जो वर्तमान में विकलांग लोगों के लिए गैर–विकलांग लोगों के साथ समान शर्तों पर समाज में भाग लेने के अवसर को सीमित करते हैं।

प्रणालीगत बाधाएं :– नीतियां, प्रथाएं या प्रक्रियाएं हैं जिसके परिणामस्वरूप कुछ लोगों को असमान पहुंच प्राप्त होती है या बाहर रखा जाता है। **उदाहरणः** पात्रता मानदंड जो अक्षमता के आधार पर लोगों को प्रभावी रूप से बाहर करते हैं, जैसे कि नौकरी के लिए आवेदक को ड्राइविंग लाइसेंस की आवश्यकता होती है, भले ही परिवहन के दूसरे रूप का उपयोग करने के लिए नौकरी को पुनर्गठित करने के तरीके हों। संसाधन शिक्षा प्रणाली के तहत सीखने के लिए प्रणालीगत बाधाएं शिक्षा प्रणाली द्वारा ही बनाई गई बाधाएं हैं। अक्सर विकलांग बच्चों को अपर्याप्तता का सबसे गंभीर परिणाम भुगतना पड़ता है।

- निःशक्तजनों को कार्यक्रम नियोजन स्तर पर उनकी आवश्यकताओं पर विचार न करके आयोजनों से बाहर रखा जाता है।
- विकलांगता के कारण अनुपस्थिति के बाद काम पर लौटने पर कर्मचारी को विभिन्न प्रकार के आवासों के बारे में पता होना चाहिए।
- विकलांग लोगों से संबंधित मुद्दों के समाधान के लिए कोई नेतृत्व या जवाबदेही नहीं।
- विकलांग लोगों के आवेदनों को प्रोत्साहित नहीं करने वाली नीतियों को किराए पर लेना।
- विशेष विद्यालयों में लंबी प्रतीक्षा सूची।
- अपने में विविधता का प्रबंधन करने के लिए शिक्षकों का अपर्याप्त प्रशिक्षण।
- शिक्षार्थियों के मूल्यांकन में लंबा विलंब।
- सीखने और सिखाने की अनुचित भाषा।

सामाजिक बाधाएं (Societal barriers) :–

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

डर (FEAR) :–: यह सबसे आम सामाजिक बाधा है, और समावेश की बाधा है। हम अक्सर उन लोगों से डरते हैं जिन्हें हम अलग–अलग देखते हैं, इसलिए हम उनके साथ बातचीत नहीं करना चुनते हैं। या शायद हम आक्रामक या आक्रामक नहीं होना चाहते हैं।

भद्दापन (AWKWARDNESS) : कभी–कभी हम नहीं जानते कि क्या कहना है। हम केवल अपने अंतर देखते हैं, और हमारे पास जुड़ने के लिए सही शब्द नहीं हैं। अलग–अलग क्षमताओं वाले लोगों को अक्सर अलग तरह से व्यवहार करने की आदत होती है या कभी–कभी अनदेखा भी किया जाता है। इस प्रकार, उन्हें शामिल न होने की उम्मीदें हो सकती हैं, और हाशिए पर महसूस करने के कारण व्यवहार अलग–थलग दिखाई दे सकता है।

अज्ञान (IGNORANCE) :– हम इंसान हैं और हम दूसरे इंसानों से उदाहरण लेकर सीखते हैं। कभी–कभी हमें सिखाया जाता है कि एक व्यक्ति जो अलग है, या शायद एक विकृति या व्यवहार है जिसे हम नहीं समझते हैं, सामान्य संबंधों के लिए सक्षम नहीं है। माता–पिता अक्सर सोचते हैं कि उन्हें अपने बच्चों को ऐसे व्यक्तियों को देखने से बचाना चाहिए जो पीड़ित हैं या अलग हैं। यदि हम विकलांगता को पार नहीं देख सकते हैं, तो इसे देखना आसान नहीं है।

कठिनाई (DIFFICULTY) :– किसी को संघर्ष करते हुए देखने की तुलना में दूर देखना बहुत आसान है।

अरुचि (DISINTEREST) :– हो सकता है कि आपके सामाजिक दायरे में कोई विकलांग न हो। यह तुम्हारी बात नहीं है। यह आपकी समस्या नहीं है। आप व्यस्त हैं। आपके अपने मुद्दे और एजेंडा हैं।

शैक्षणिक बाधाएं (Pedagogical barriers) :– शिक्षाशास्त्र शब्द का अर्थ शिक्षक, प्रशिक्षक से शिक्षार्थी तक सूचना और कौशल के प्रसारण से है, जबकि एंड्रागॉजी शब्द शिक्षार्थियों को जानकारी और कौशल हासिल करने में मदद करने के लिए प्रक्रियाएं और संसाधन प्रदान करने की प्रक्रिया है।

एक शिक्षक/प्रशिक्षक के रूप में यह समझना महत्वपूर्ण है कि वयस्क कैसे सीखते हैं जिसमें शिक्षार्थियों की जरूरतों को समझना, सीखने के लिए प्रेरणा, सीखने का चक्र, सीखने की शैली की विशेषताएं, और एक शिक्षार्थी के रूप में प्रभावी होने के लिए सीखने की आवश्यकता होती है। जब एक शिक्षकध्प्रशिक्षक के पास यह ज्ञान नहीं है, या इसे प्रदर्शित करने में विफल रहता है, तो इसे एक शैक्षणिक बाधा माना जाता है।

- प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं की जरूरतों को पूरा करने की प्रासंगिकता को समझने में विफल रहा है, ''वयस्क कैसे सीखते हैं'' के ज्ञान का अभाव है, और शिक्षार्थियों के बीच सामाजिक संपर्क की आवश्यकता का आकलन नहीं किया है।
- प्रशिक्षक ने आवश्यक अधिगम अभिविन्यास कारकों को नहीं समझा है जो सीखने के लिए आवश्यक हैं।
- प्रशिक्षक ने प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए उपयुक्त रणनीति प्रदान नहीं की है और न ही शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान और सीखने के अनुभवों की प्रासंगिकता को समझा है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- प्रशिक्षक ने प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए उपयुक्त रणनीति प्रदान नहीं की है और न ही शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान और सीखने के अनुभवों की प्रासंगिकता को समझा है। लिंडा ए. हेन, इथाका कॉलेज के प्रोफेसर, ने एक समावेशी वातावरण के लिए चार सबसे आम बाधाओं को रेखांकित करते हुए एक लेख लिखा।

मनोवृत्ति (Attitudes) :– एक स्कूल प्रणाली में जहां डाउन सिंड्रोम के बारे में बहुत अधिक समझ और ज्ञान नहीं है, शिक्षक डर सकते हैं और परिवर्तन का विरोध कर सकते हैं।

प्रशासन (Administration) : – ऊपर के कारण के समान, यदि प्रशासक समावेशन के दर्शन या डाउन सिंड्रोम वाले बच्चों की क्षमताओं को नहीं समझते हैं, तो एक समावेशी कक्षा के लिए संरचना और प्रक्रिया को स्थापित करना मुश्किल हो सकता है।

स्थापत्य संबंधी मुद्दे (Architectural issues) :– क्या पूरे स्कूल में स्कूल की पहुंच विकलांग है? लिफ्ट या ब्रेल जैसी अन्य सुविधाओं के बारे में क्या? कई स्कूलों में एक ऐसा क्षेत्र है जो विकलांगों के लिए सुलभ है लेकिन पूरा स्कूल विकलांग लोगों के लिए नहीं बनाया गया है।

कार्यक्रम (Programs) : – सामान्य पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और परियोजनाएँ विकलांग छात्रों के लिए उपयुक्त (या आसानी से परिवर्तित) हो सकती हैं।

इस गाइड के बाकी हिस्सों में शिक्षकों के लिए उनकी कक्षा में समावेशी दर्शन का उपयोग करने के लिए सुझावों, विचारों और सलाह पर चर्चा होगी। अधिकांश शोध डाउन सिंड्रोम वाले छात्रों को शिक्षित करने के सबसे प्रभावी तरीके के रूप में इस विचारधारा का समर्थन करते हैं।

IDEA 2004 में कहा गया है...

''लगभग 30 वर्षों के शोध और अनुभव ने प्रदर्शित किया है कि विकलांग बच्चों की शिक्षा को ऐसे बच्चों के लिए उच्च अपेक्षाएं रखने और नियमित कक्षा में सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम तक उनकी पहुंच सुनिश्चित करके, अधिकतम संभव सीमा तक, अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। विकासात्मक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए और, सभी बच्चों के लिए स्थापित की गई चुनौतीपूर्ण अपेक्षाओं को अधिकतम संभव सीमा तक पूरा करने के लिएय और उत्पादक और स्वतंत्र वयस्क जीवन जीने के लिए तैयार रहें .... ''

समावेशी शिक्षा के सूत्रधार (Facilitators of inclusive education) :–

समावेशन सुविधाकर्ता क्या है – और ये विशेष शिक्षक विद्यालय की टीमों को प्रामाणिक रूप से समावेशी शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करने में कैसे मदद कर सकते हैं? अपनी दूरदर्शी गाइडबुक रीइमेजिनिंग स्पेशल एजुकेशन में, जेना रूफो और जूली कॉस्टन एक समावेश सुविधाकर्ता को परिभाषित करते हैं

- एक कोच जो समावेशी प्रथाओं पर नौकरी प्रदान करता है – एक समन्वयक और सहयोगी जो सार्थक समावेशी शिक्षा को लागू करने के लिए एक स्कूल में कई पेशेवरों का समर्थन करता है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- सबसे अधिक छात्रों के लिए संशोधनों का निर्माण करते हुए पाठ्यक्रम को अनुकूलित करने की उनकी क्षमता के निर्माण में कर्मचारियों के लिए एक संसाधन महत्वपूर्ण जरूरतें।
- शिक्षकों के लिए एक सलाहकार जो सकारात्मक व्यवहार समर्थन पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

समावेशन सुविधाकर्ता महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर सकते हैं क्योंकि स्कूल लंबे समय तक बंद रहने के बाद फिर से खुलते हैं और छात्र अपने शैक्षणिक और सामाजिक–भावनात्मक कौशल में अधिक विविधता के साथ लौटते हैं। आज की पोस्ट में, विशेष शिक्षा की रीइमेजिनिंग से उद्धृत और अनुकूलित, आप तीन अलग–अलग प्रकार के समावेशन सुविधाकर्ताओं के बारे में जानेंगे कि वे स्कूलों को कैसे लाभ पहुंचाते हैं, और किस प्रकार की सुविधा विभिन्न सेटिंग्स और स्थितियों में सबसे अच्छा काम करती है।

Unit :– 2.5 Framework, Act, Policy provisions for inclusive education (समावेशी शिक्षा के लिए रूपरेखा, अधिनियम, नीति प्रावधान) – सर्व शिक्षा अभियान के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शुरू किया गया था प्राथमिक शिक्षा। यह एक शून्य अस्वीकृति नीति अपनाता है और एक दृष्टिकोण का उपयोग करता है विभिन्न मौजूदा योजनाओं और कार्यक्रमों को परिवर्तित करना।

सर्व शिक्षा अभियान 2001 भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसकी शुरूआत मे अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा एक निश्चित समयावधि के तरीके से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण जैसा कि भारतीय संविधान के 86वें संशोधन द्वारा निर्देशित किया गया है जिसके तहत 6–14 साल के बच्चों की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा।

इसमें विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा के तहत निम्नलिखित घटक शामिल हैं–

- प्रारंभिक हस्तक्षेप और पहचान
- शैक्षिक प्लेसमेंट
- कार्यात्मक और औपचारिक मूल्यांकन
- एड्स और उपकरण
- सहायता सेवाएं शिक्षक प्रशिक्षण।
- संसाधन सहायता व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (आईईपी)
- माता–पिता का प्रशिक्षण और समुदाय जुटाना
- योजना और प्रबंधन
- विशेष स्कूलों का सुदृढ़ीकरण
- वास्तु बाधाओं को दूर करना
- अनुसंधान।
- निगरानी और मूल्यांकन

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

माध्यमिक स्तर पर विकलांगों के लिए समावेशी शिक्षा (आईईडीएसएस), 2009 Inclusive Education for Disabled at Secondary Stage (IEDSS), 2009 – माध्यमिक स्तर पर विकलांगों के लिए समावेशी शिक्षा की योजना (आईईडीएसएस) की गई है। 2009–10 से शुरू किया गया। यह योजना विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा (आईईडीसी) की पिछली योजना की जगह लेती है और कक्षा IX – XII में विकलांग बच्चों की समावेशी शिक्षा के लिए सहायता प्रदान करती है। यह योजना अब 2013 से राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) के तहत समाहित हो गई है। राज्य / केंद्रशासित प्रदेश भी आरएमएसए के तहत आरएमएसए सम्मिलित योजना के रूप में शामिल होने की प्रक्रिया में हैं।

लक्ष्य (Aims) :– सभी विकलांग छात्रों को सक्षम बनाने के लिए, एक समावेशी और सक्षम वातावरण में आठ साल की प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद माध्यमिक स्कूली शिक्षा के चार साल आगे बढ़ाने के लिए।

उद्देश्य (Objectives) :– यह योजना सरकारी, स्थानीय निकाय और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले सभी बच्चों को शामिल करती है, जो विकलांग व्यक्ति अधिनियम (1995) और राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (1999) के तहत कक्षा IX में परिभाषित एक या एक से अधिक विकलांग हैं। बारहवीं, अर्थात् अंधापन, कम दृष्टि, कुष्ठ रोग, श्रवण दोष, चलन अक्षमता, मानसिक मंदता, मानसिक बीमारी, आत्मकेंद्रित और मस्तिष्क पक्षाघात और अंततः भाषण हानि, सीखने की अक्षमता आदि को कवर कर सकता है। विकलांग लड़कियों को उनकी मदद करने के लिए विशेष ध्यान दिया जाता है। माध्यमिक विद्यालयों तक पहुंच प्राप्त करने के साथ–साथ उनकी क्षमता को विकसित करने के लिए सूचना और मार्गदर्शन प्राप्त करना। इस योजना के तहत हर राज्य में मॉडल समावेशी स्कूलों की स्थापना की परिकल्पना की गई है।

आरएमएसए – राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, 2009 इस मिशन का सफल क्रियान्वयन 2009–2010 तक हुआ था। हालांकि, यह सभी छात्रों के लिए कुशल विकास, विकास और समानता के लिए स्थितियां प्रदान करने पर केंद्रित है। इस योजना में निम्नलिखित भी शामिल हैं:

- बहुआयामी अनुसंधान,
- तकनीकी परामर्श,
- विभिन्न कार्यान्वयन
- अनुदान सहायता

आरएमएसए का मुख्य उद्देश्य (Core Purpose of RMSA) :– राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) का मुख्य उद्देश्य और दीर्घकालिक उद्देश्य इस प्रकार है:

- माध्यमिक स्तर पर प्रदान की जाने वाली शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार करना और यह सभी माध्यमिक विद्यालयों को प्राधिकरण द्वारा निर्धारित सभी मानदंडों के अनुरूप बनाने के द्वारा संभव है।
- लिंग, सामाजिक–आर्थिक और विकलांगता की बाधाओं को दूर करना। ये बाधाएं सामाजिक पूर्वाग्रह की तरह हैं जो केवल किसी की मानसिकता को चौड़ा करने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करती हैं।
- इसके अलावा, 2017 तक माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच (जो बारहवीं पंचवर्षीय योजना है)।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

➢ बल्कि वर्ष 2020 तक छात्रों के सार्वभौमिक प्रतिधारण के महत्वाकांक्षी लक्ष्य।

Unit :– 3 Creating supports for inclusive education

Unit :– 3.1 Early identification and intervention for inclusion (समावेश के लिए प्रारंभिक पहचान और हस्तक्षेप) – प्रारंभिक पहचान माता–पिता, शिक्षक, स्वास्थ्य पेशेवर, या अन्य वयस्कों की बच्चों में विकासात्मक मील के पत्थर को पहचानने और प्रारंभिक हस्तक्षेप के मूल्य को समझने की क्षमता को संदर्भित करती है।

एक बच्चे के जीवन के शुरुआती वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ये वर्ष बच्चे के जीवित रहने और जीवन में फलने–फूलने का निर्धारण करते हैं, और उसके / उसके सीखने और समग्र विकास की नींव रखते हैं। प्रारंभिक वर्षों के दौरान ही बच्चे संज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकसित करते हैं जो उन्हें जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का कहना है कि प्रारंभिक बचपन समग्र विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण चरण है। विकलांगता और कुपोषण जैसे कारक विशेष रूप से कठिन चुनौतियों का सामना करते हैं। हालांकि, अगर इन समस्याओं को कम उम्र में हल किया जाता है, तो यह विकास संबंधी जोखिमों को कम करता है और बाल विकास को बढ़ाता है।

हालांकि, संयुक्त राज्य अमेरिका के आईडीईए (सामाजिक–जनसांख्यिकीय प्रोफाइल और विकलांग शिक्षा अधिनियम की स्थापना वाले व्यक्ति) के दिशानिर्देशों के अनुसार, ''ईआईपी में भाग लेने वाले बच्चों में नैदानिक सुविधाओं का प्रारंभिक पैटर्न। हस्तक्षेप सेवाओं को अध्ययन को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसका आकलन करने के लिए भी मांग की गई है। बच्चों की विकास संबंधी आवश्यकताओं की रूपरेखा और अपेक्षाएं, जन्म से लेकर तीन वर्ष तक के लोग, जो लंबे समय तक क्लिनिक में उपस्थित रहे, जिन्हें शारीरिक, संज्ञानात्मक, अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कार्यक्रम को संशोधित करने का उद्देश्य, संचारी, सामाजिक, भावनात्मक या अनुकूली विकास या निदान की स्थिति है जिसके परिणामस्वरूप विकासात्मक देरी होने की उच्च संभावना है ''

यदि विकासात्मक देरी या विकलांग बच्चों और उनके परिवारों को समय पर और उचित प्रारंभिक हस्तक्षेप, समर्थन और सुरक्षा प्रदान नहीं की जाती है, तो उनकी कठिनाइयाँ अधिक गंभीर हो सकती हैं, जिससे जीवन भर के परिणाम, गरीबी में वृद्धि और गहरा बहिष्कार हो सकता है। विशिष्ट विकास कभी–कभी एक संघर्ष होता है। हर कोई यह सोचना पसंद करता है कि सभी बच्चे ठीक हो जाएंगे, माता–पिता को चिंता करने की कोई बात नहीं होगी। लेकिन वास्तविकता यह है कि सभी बच्चे नहीं उठेंगे, और कुछ आगे और पीछे गिरते रहेंगे। विज्ञान दर्शाता है कि बौद्धिक और संज्ञानात्मक क्षमता इस बात से निर्धारित होती है कि जीवन के पहले कुछ वर्षों के दौरान मस्तिष्क कैसे विकसित होता है। मस्तिष्क अन्य सभी अंग प्रणालियों के जैविक प्रभावों को नियंत्रित करता है और अनुभूति, बुद्धि, सीखने, मुकाबला करने और अनुकूली कौशल और व्यवहार को प्रभावित करता है। क्योंकि मस्तिष्क मानव जीवन के इन विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करता है, बिगड़ा हुआ मस्तिष्क कार्य बिगड़ा हुआ शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य

की ओर जाता है और समाज में कामकाज में कमी आती है। इसलिए, स्वस्थ मस्तिष्क विकास का समर्थन करने के लिए प्रारंभिक बचपन में निवेश से उपचार, स्वास्थ्य देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं और कैद की बढ़ी हुई दरों में सामाजिक लागत को कम करने में मदद मिलती है।

इस प्रारंभिक पहचान के कई कारण हैं:–

- प्रारंभिक पहचान से शीघ्र हस्तक्षेप होता है, जिसे उपचार के लिए आवश्यक माना जाता है।
- बच्चों को अभी तक शैक्षणिक विफलता का सामना नहीं करना पड़ा है इसलिए उनके साथ काम करना आसान हो जाता है क्योंकि वे अभी भी सीखने की अपनी प्रेरणा को बनाए रखते हैं।
- उस छोटी सी उम्र में उन्होंने प्रतिपूरक रणनीति विकसित नहीं की है, जो बाद में उपचारात्मक प्रक्रिया में बाधा बनेगी।
- शोध से पता चला है कि जिन बच्चों को कम उम्र में मूल्यांकन और उपचारात्मक सेवाएं प्राप्त हुई थीं, वे विकलांगता से बेहतर ढंग से निपटने में सक्षम थे और बाद में सहायता प्राप्त करने वालों की तुलना में बेहतर पूर्वानुमान थे।

शीघ्र हस्तक्षेप (Early Intervention) :–

(IDEA 2005) :– ''विकलांग शिशुओं और बच्चों के लिए कार्यक्रम एक संघीय अनुदान कार्यक्रम है जो राज्यों को विकलांग शिशुओं और बच्चों के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं के एक व्यापक राज्यव्यापी कार्यक्रम के संचालन में सहायता करता है, (डंस्ट , ट्रिवेट और जोड्री , 1997) .

यह आमतौर पर अनौपचारिक और औपचारिक सामाजिक समर्थन के सदस्यों से शिशुओं और छोटे बच्चों के परिवारों को सहायता (और संसाधन) के प्रावधान के रूप में भी सूचित किया जाता है। नेटवर्क जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से माता–पिता, परिवार और बच्चे के कामकाज पर प्रभाव डालते हैं। गुरलनिक और बेनेट, 1987, पी .19)

विकास संबंधी समस्याओं वाले बच्चों के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप ''जीवन के पहले पांच वर्षों के दौरान शुरू किए गए पर्यावरणीय या अनुभवात्मक कारकों के जोड़तोड़ की एक श्रृंखला के माध्यम से विकास को बढ़ावा देने के लिए व्यवस्थित और नियोजित प्रयास'' है।

प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं की एक प्रणाली है जो विकासात्मक देरी या विकलांग बच्चों और बच्चों की सहायता करती है। प्रारंभिक हस्तक्षेप योग्य शिशुओं और बच्चों को बुनियादी और ब्रांड–नए कौशल सीखने में मदद करने पर केंद्रित है जो आमतौर पर जीवन के पहले तीन वर्षों के दौरान विकसित होते हैं, जैसे:

- शारीरिक (पहुंचना, लुढ़कना, रेंगना और चलना)
- संज्ञानात्मक (सोच, सीखना, समस्याओं को हल करना)
- संचार (बात करना, सुनना, समझना)
- सामाजिक / भावनात्मक (खेलना, सुरक्षित और खुश महसूस करना)

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- स्वयं सहायता (खाना, कपड़े पहनना)

विकास के प्रत्याशित या अनुमानित पाठ्यक्रम को बदलने के लिए नियोजित कार्यक्रम की शुरूआत जानबूझकर समयबद्ध और व्यवस्थित की गई।

- निवारक –प्राथमिक, माध्यमिक।
- उपचारात्मक – उपचार , शल्य चिकित्सा
- उपचारात्मक – एड्स और उपकरण।

वैकल्पिक तरीके (Alternative methods) :– प्रारंभिक हस्तक्षेप विभिन्न प्रकार और विकलांगता की डिग्री वाले शिशुओं और छोटे बच्चों के लिए एक प्रारंभिक उत्तेजना और संवर्धन कार्यक्रम है। यह मुख्य रूप से विकासात्मक विकलांग बच्चों के लिए सेवाओं की पेशकश के लिए उपयोग किया जाता है जो छोटे बच्चों के विकास को बढ़ाएंगे। विकासशील देशों में, जहां शहरी मलिन बस्तियों और वंचित ग्रामीण आबादी में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है और जहां गरीबी व्यापक है, ऐसी प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाएं जोखिम वाले शिशुओं की उचित देखभाल और प्रबंधन सुनिश्चित करने का आधार बनती हैं।

प्रारंभिक हस्तक्षेप स्कूली उम्र या उससे कम उम्र के बच्चों पर लागू होता है, जिन्हें एक विकलांग स्थिति या अन्य विशेष आवश्यकता विकसित होने का खतरा होता है जो उनके विकास को प्रभावित कर सकता है। प्रारंभिक हस्तक्षेप का अर्थ है बच्चे को यथासंभव कार्यात्मक बनाने में मदद करने के लिए विशिष्ट तरीके खोजना। प्रारंभिक हस्तक्षेप कभी–कभी एक बच्चे को साथियों तक पकड़ने में मदद कर सकता है एक असाधारण बच्चे के साथ जल्दी हस्तक्षेप करने के तीन प्राथमिक कारण हैं:

1. बच्चे के विकास को बढ़ाने के लिए,
2. परिवार को सहायता और सहायता प्रदान करने के लिए, और
3. समाज के लिए बच्चे और परिवार के लाभ को अधिकतम करने के लिए।

प्रारंभिक हस्तक्षेप की प्रभावशीलता (Effectiveness of Early Intervention) :–

- जीवन में बाद में कम विशेष शिक्षा और अन्य सुविधा सेवाओं की आवश्यकता।
- कम बार ग्रेड में बनाए रखा जा रहा है।
- कुछ मामलों में हस्तक्षेप के वर्षों बाद गैर–विकलांग सहपाठियों से अप्रभेद्य होना।

प्रारंभिक हस्तक्षेप का फोकस (Focus of Early Intervention) :–

- स्क्रीनिंग।
- विकलांगता की रोकथाम
- देरी की पहचान।
- विकासात्मक रूप से विलंबित बच्चे की सकारात्मक संपत्तियों को बढ़ावा देना।

UP066 Usha Charitable Trust, Lucknow

- अपने शिशुओं और बच्चों की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए परिवार की क्षमता में वृद्धि करना।

Unit :– 3.2 Foundational literacy for inclusive education (समावेशी शिक्षा के लिए आधारभूत साक्षरता) – मूलभूत साक्षरता पढ़ने, लिखने और भाषा कौशल का बुनियादी स्तर है जो शिक्षार्थियों के लिए शिक्षा तक पहुँचने और उसमें संलग्न होने के लिए आवश्यक है। समावेशी शिक्षा सभी शिक्षार्थियों के लिए उनकी पृष्ठभूमि या क्षमताओं की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच के प्रावधान को संदर्भित करती है। इसलिए, एक समावेशी शिक्षा वातावरण बनाने के लिए मूलभूत साक्षरता कौशल का निर्माण महत्वपूर्ण है जो विकलांग या हाशिए के समुदायों सहित सभी छात्रों की विविध सीखने की जरूरतों को पूरा करता है।

मूलभूत साक्षरता उन कौशलों का समुच्चय है जिन्हें कुशल पाठक और लेखक बनने के लिए छात्रों को जल्दी विकसित करने की आवश्यकता होती है। इन कौशलों में ध्वन्यात्मक जागरूकता, नादविद्या, प्रवाह, शब्दावली और समझ शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक कौशल में क्या शामिल है, इसके कुछ उदाहरण यहां दिए गए हैं:

ध्वन्यात्मक जागरूकता: यह शब्दों में व्यक्तिगत ध्वनियों को सुनने और हेरफेर करने की क्षमता को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक छात्रों से ''बिल्ली'' शब्द में पहली ध्वनि की पहचान करने या ''सनशाइन'' शब्द को उसकी अलग–अलग ध्वनियों में विभाजित करने के लिए कह सकता है।

ध्वन्यात्मकता :– यह अक्षरों और ध्वनियों के बीच संबंध को संदर्भित करता है। छात्र विशिष्ट ध्वनियों को विशेष अक्षरों और अक्षर संयोजनों के साथ जोड़ना सीखते हैं। उदाहरण के लिए, वे सीख सकते हैं कि ''ए'' अक्षर ''एप्पल'' के रूप में ध्वनि / ए / बनाता है।

प्रवाह :– यह गति, सटीकता और अभिव्यक्ति के साथ पढ़ने की क्षमता को संदर्भित करता है। जो छात्र धाराप्रवाह पाठक हैं, वे शब्दों पर ठोकर खाए बिना सहजता और सहजता से पढ़ सकते हैं।

शब्दावली :– यह उन शब्दों को संदर्भित करता है जिन्हें छात्र जानते और समझते हैं। वे जो पढ़ते हैं उसे समझने के लिए, छात्रों के पास एक मजबूत शब्दावली होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, वे पढ़ने, प्रत्यक्ष निर्देश या प्रासंगिक संकेतों के माध्यम से नए शब्द सीख सकते हैं।

बोधगम्यता :– यह जो कुछ पढ़ा जाता है उसे समझने और अर्थ निकालने की क्षमता को संदर्भित करता है। जो छात्र मजबूत पाठक होते हैं वे पाठ के शाब्दिक अर्थ के साथ–साथ इसके गहरे, अधिक सूक्ष्म अर्थ दोनों को समझने में सक्षम होते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

इन मूलभूत साक्षरता कौशलों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करके, शिक्षक छात्रों को आत्मविश्वासी, सक्षम पाठक और लेखक बनने में मदद कर सकते हैं। बदले में, यह सभी विषय क्षेत्रों में उनकी अकादमिक सफलता का समर्थन कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो पढ़ने में संघर्ष करता है उसे विज्ञान या सामाजिक अध्ययन पाठ को समझने में कठिनाई हो सकती है। हालाँकि, अपने मूलभूत साक्षरता कौशल का निर्माण करके, वे इन क्षेत्रों में अधिक सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, समावेशी साक्षरता निर्देश प्रदान करके जो सभी छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है, शिक्षक इक्विटी को बढ़ावा दे सकते हैं और विविध पृष्ठभूमि और अलग–अलग क्षमताओं वाले शिक्षार्थियों की सफलता का समर्थन कर सकते हैं।

Unit :– 3.3 Empowering families for inclusion (समावेश के लिए परिवारों को सशक्त बनाना) – परिवारों को सशक्त बनाने में, परिवारों में सुरक्षात्मक कारकों, या सकारात्मक गुणों को मजबूत करने के लिए समुदाय आधारित रोकथाम सेवाएं प्रदान की जाती हैं। सेवाएं कौशल, व्यक्तिगत विशेषताओं, ज्ञान, रिश्तों और व्यक्तियों और परिवारों को स्कूल, काम और जीवन में अनुभव की गई चुनौतियों और कठिनाइयों से निपटने में मदद करने के अवसर विकसित करती हैं।

पालन–पोषण और लगाव – जब माता–पिता और बच्चों में एक–दूसरे के लिए मजबूत, स्वस्थ भावनाएँ होती हैं, तो बच्चों को भरोसा होता है कि उनके माता–पिता उन्हें वह प्रदान करेंगे जो उन्हें पनपने के लिए चाहिएय प्यार, स्वीकृति, सकारात्मक मार्गदर्शन और सुरक्षा सहित।

बाल विकास का ज्ञान – माता–पिता जो समझते हैं कि बच्चे कैसे बढ़ते और विकसित होते हैं, वे एक ऐसा वातावरण प्रदान करने में सक्षम होते हैं जहाँ बच्चे अपनी क्षमता तक पहुँच सकें।

माता–पिता का लचीलापन – जीवन में आने वाली सभी प्रकार की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने की क्षमता माता–पिता के लिए महत्वपूर्ण है, माता–पिता जो तनाव को प्रबंधित करने और अच्छी तरह से कार्य करने में सक्षम हैं, उनके बच्चों के प्रति क्रोध और निराशा को निर्देशित करने की संभावना कम होती है।

सामाजिक जुड़ाव रचनात्मक, सहायक व्यक्तियों और समुदाय के साथ जुड़ाव की भावना रखने से परिवार के पालन–पोषण की दैनिक चुनौतियों का सामना करने में प्रोत्साहन और सहायता मिलती है।

माता–पिता के लिए सहायता – माता–पिता जो भोजन, कपड़े और आश्रय सहित अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधनों की पहचान करने और उन तक पहुंचने में सक्षम हैं, अपने बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करते हैं।

परिवारों को सशक्त बनाना परिवारों को आवाज और विकल्प देकर उन्हें मजबूत बनाता है। शक्ति आधारित सेवाएं प्रत्येक परिवार की जरूरतों के इर्द–गिर्द केंद्रित होती हैं। प्रत्येक परिवार के सकारात्मक गुणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, कार्यक्रम परिवार का समर्थन करता है क्योंकि वे उन आदतों की पहचान करते हैं और बदलते हैं जो स्वस्थ तरीके से कार्य करने की उनकी क्षमता को चुनौती देते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

माता–पिता को शामिल करना, कक्षा के भीतर और बाहर, गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यह समावेशी शिक्षा के मामले में और भी अधिक प्रासंगिक है, जो औपचारिक शिक्षा से कहीं अधिक व्यापक है और केवल कक्षा की चार दीवारों के भीतर ही नहीं होनी चाहिए।

- माता–पिता का सहयोग न केवल बच्चों के लिए लाभ का हैः सभी पक्षों के लिए संभावित लाभ भी हैं, उदाहरण के लिएः माता–पिता अपने बच्चों के साथ बातचीत बढ़ाते हैं, उनकी जरूरतों के प्रति अधिक संवेदनशील और संवेदनशील बनते हैं और अपने पालन–पोषण के कौशल में अधिक आत्मविश्वास रखते हैं। .
- शिक्षक परिवारों की संस्कृति और विविधता की बेहतर समझ हासिल करते हैं, काम में अधिक सहज महसूस करते हैं और उनके मनोबल में सुधार करते हैं।
- स्कूल, माता–पिता और समुदाय को शामिल करके, समुदाय में बेहतर प्रतिष्ठा स्थापित करते हैं।

स्कूलों में माता–पिता की भागीदारी (Parental Involvement in Schools) :–

- एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है – स्कूल का दौरा करना, कक्षा चिकित्सा सत्रों के दौरान अवलोकन करना, बैठकों में भाग लेना।
- अक्सर कुछ शिक्षक दृष्टिकोणों को दूर करना पड़ता है उदा। यह महसूस करना कि माता–पिता घुसपैठ कर रहे हैं।
- स्कूल में माता–पिता की शारीरिक उपस्थिति महत्वपूर्ण।
- शिक्षकों के साथ बेहतर संचार बच्चे के सामाजिक शैक्षणिक और विकासात्मक कौशल के विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। .

यहां कुछ विशिष्ट तरीके दिए गए हैं जिनसे स्कूल शिक्षा में अधिक माता–पिता, परिवारों और समुदायों को शामिल कर सकते हैंः

- भागीदारी के बारे में जरूरतों, रुचियों और विचारों को निर्धारित करने के लिए शिक्षकों और परिवारों का सर्वेक्षण करें।
- परिवार के अनुकूल नीतियों और कानूनों को विकसित और पारित करना ख्अर्थात, माता–पिता / देखभाल करने वालों के लिए स्कूल या शिक्षा से संबंधित गतिविधियों में भाग लेने के लिए अनुपस्थिति की छुट्टियांय लचीला । विविध परिवारों द्वारा भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए शेड्यूलिंग,।
- स्कूल संकायों के लिए परिवार और सामुदायिक जुड़ाव पर व्यावसायिक विकास प्रदान करें।
- प्रभावी संचार और भागीदारी कौशल पर माता–पिता और सामुदायिक हितधारकों के लिए प्रशिक्षण प्रदान करें।
- स्कूल और स्कूल जिला नीतियों और प्रक्रियाओं के बारे में बेहतर जानकारी प्रदान करें।
- परिवारों, व्यवसायों और समुदाय को स्कूल और परिवार की भागीदारी के अवसरों, नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में सूचित करने के लिए एक आउटरीच रणनीति विकसित करें।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- परिवारों के पास अपने बच्चे की विशेष विकलांगता, उसके प्रभावों और उनके बच्चे की क्षमता पर इसके प्रभाव के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है। यह अक्सर निराशा की भावना की ओर जाता है। प्रारंभिक पहचान और हस्तक्षेप पहल विकलांग बच्चों की शिक्षा के बारे में माता–पिता और समुदाय के सदस्यों को संवेदनशील बनाती है।

हालाँकि, यह मान्यता कि शिक्षा में पारिवारिक जुड़ाव से बच्चों को लाभ होता है, यह स्पष्ट करता है कि भागीदारी कैसे एक सकारात्मक शक्ति बन जाती है। स्कूलों के साथ सहयोगात्मक तरीके से शामिल होने के लिए परिवारों के लिए पहला कदम एक सामाजिक और शैक्षिक माहौल को बढ़ावा देना है जहां माता–पिता और भागीदारों का स्वागत, सम्मान, भरोसेमंद, सुना और आवश्यक महसूस होता है।

Unit :– 3.4 Sensitizing stakeholders and schools for inclusive education (समावेशी शिक्षा के लिए हितधारकों और स्कूलों को संवेदनशील बनाना) – शिक्षा में, हितधारक शब्द आमतौर पर किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो किसी स्कूल और उसके छात्रों के कल्याण और सफलता में निवेश करता है, जिसमें प्रशासक, शिक्षक, कर्मचारी सदस्य, छात्र, माता–पिता, परिवार, समुदाय के सदस्य, स्थानीय व्यापारिक नेता और निर्वाचित अधिकारी शामिल हैं। स्कूल बोर्ड के सदस्यों, नगर पार्षदों और राज्य के प्रतिनिधियों के रूप में। हितधारक सामूहिक संस्थाएं भी हो सकते हैं, जैसे कि स्थानीय व्यवसाय, संगठन, वकालत समूह, समितियां, मीडिया आउटलेट और सांस्कृतिक संस्थान, विशिष्ट समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठनों के अलावा, जैसे शिक्षक संघ, अभिभावक शिक्षक संगठन, और अधीक्षकों, प्रधानाचार्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले संघ, स्कूल बोर्ड , या विशिष्ट शैक्षणिक विषयों के शिक्षक (उदाहरण के लिए, नेशनल काउंसिल ऑफ टीचर्स ऑफ इंग्लिश या वर्मौंट काउंसिल ऑफ टीचर्स ऑफ मैथमेटिक्स)। एक शब्द में, हितधारकों के पास ''स्कूल और उसके छात्रों में हिस्सेदारी है, जिसका अर्थ है कि उनके पास व्यक्तिगत, पेशेवर, नागरिक, या वित्तीय हित या चिंता है।

हालाँकि, समावेशी शिक्षा को एक वास्तविकता बनाने के लिए, सिस्टम में कई टुकड़े करने होंगे। यह सच है कि भारत सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण निधि आवंटन किया है। लेकिन ऐसा करने के लिए हमें हितधारकों को उपयुक्त रूप से तैयार और शामिल करने की आवश्यकता है। कुछ हितधारकों में नियमित शिक्षक, विशेष / संसाधन शिक्षक, स्कूल प्रशासक, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता–पिता और उनके साथियों के माता–पिता, जिनकी विशेष आवश्यकता नहीं हो सकती है, स्वयं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे शामिल हैं। संक्षेप में, समाज के सभी वर्ग जिनका प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से बच्चों की शिक्षा में हित है। समावेशन की सफलता सभी हितधारकों के समन्वित और सहयोगात्मक प्रयासों में निहित है,

विशेष शिक्षक (Special Educator) :– समावेशी शिक्षा को एक बड़े कदम के रूप में शुरू करने के साथ, विशेष शिक्षकों की एक बदलती भूमिका उभरती हुई दिखाई दे रही है। भारतीय पुनर्वास परिषद (आरसीआई) द्वारा अनुमोदित विशेष शिक्षकों के शैक्षिक कार्यक्रम विशेष शिक्षकों को विशेष स्कूलों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष शिक्षक बनने के लिए तैयार करते हैं। सर्व शिक्षा अभियान ने उनके लिए समावेशी शिक्षा व्यवस्था में संसाधन शिक्षक बनने के द्वार खोल दिए हैं, जहां

उनसे नियमित स्कूलों में नियमित रूप से आने और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों को पूरा करने में नियमित शिक्षकों के भागीदार के रूप में कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। हम विश्वास के साथ यह नहीं कह सकते कि वे इस कार्य के लिए कौशल से लैस हैं। जैसे–जैसे भूमिकाएँ बदलती हैं, शिक्षक की तैयारी में भी बदलाव की आवश्यकता होती है। शायद, एक अल्पकालिक सेवाकालीन कार्यक्रम उन्हें इस उद्देश्य के लिए तैयार कर सकता है, जिसे आरसीआई के सतत पुनर्वास शिक्षा (सीआरई) कार्यक्रमों द्वारा पेश किया जा सकता है।

कक्षा और विषय शिक्षक (Class and subject teachers) :– समावेशी स्कूलों में, हालांकि सभी बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी नियमित शिक्षक के पास होती है, संसाधन शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे नियमित स्कूलों में बच्चों और शिक्षकों का समर्थन करके समावेशी शिक्षा की सुविधा प्रदान करें। कुछ उदाहरणों में, यह देखा गया है कि नियमित शिक्षक यह मानते हैं कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे संसाधन शिक्षकों की अनन्य जिम्मेदारी हैं। यह भी मनाया जाता है। कि संसाधन शिक्षक अक्सर उन बच्चों की शिक्षा के संबंध में नियमित शिक्षकों के साथ प्रभावी ढंग से या पर्याप्त रूप से संवाद नहीं करते हैं जिन्हें सहायता की आवश्यकता होती है। इसका परिणाम शिक्षकों के बीच समन्वय की कमी के रूप में होता है, जो अंततः समावेश के उद्देश्य को विफल कर देता है। कई बार नियमित शिक्षक शामिल करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। इसलिए, उनके ज्ञान और कौशल की कमी के परिणामस्वरूप परिवर्तन के प्रति उनका प्रतिरोध होता है। यह आवश्यक है कि सभी हितधारकों को एक सहज, निर्बाध समावेशन के लिए उपयुक्त रूप से तैयार किया जाए।

साथियों (Peers) :– विकलांग बच्चों और विशेष आवश्यकता वाले उनके साथियों को शामिल करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए ताकि उनमें से किसी के लिए भी अनुभव भारी न हो। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे जो 8 से 10 बच्चों की एक छोटी कक्षा के साथ एक सुरक्षात्मक वातावरण के आदी हैं, 40 बच्चों की एक बड़ी कक्षा में रखे जाने पर चौंक सकते हैं और वे बच्चे जिन्होंने विकलांग बच्चे को नहीं देखा है, वे विभिन्न भावनात्मक और व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं के साथ स्थिति पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं, दया और सहानुभूति से लेकर धमकाने और विशेष जरूरतों वाले अपने साथियों का मजाक उड़ाने तक।

माता–पिता (Parents) :– माता–पिता को भी आशंका हो सकती है यदि उपयुक्त रूप से तैयार नहीं किया गया है। विकलांग बच्चे के माता–पिता बड़े नियमित वर्ग के लिए सुरक्षात्मक विशेष वर्ग को प्राथमिकता दे सकते हैं जहां उनके बच्चे को शिक्षक से ध्यान नहीं मिल सकता है। ऐसे मौके आए हैं जब बिना किसी विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के माता–पिता डरते थे कि उनका बच्चा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ रहकर अजीब तरह से ''व्यवहार'' कर सकता है। ये समावेश से संबंधित कई मुद्दों के कुछ उदाहरण हैं जिनकी आवश्यकता है संबोधित किया जाना चाहिए, ताकि समावेश को उसके सही अर्थों में महसूस किया जा सके।

स्कूल प्रशासक (School Administrators) :– समावेशन को सफल बनाने के लिए स्कूल प्रशासक एक अन्य महत्वपूर्ण घटक हैं। व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं के लिए रैंप प्रदान करके कक्षाओं तक पहुंच, उज्ज्वल रोशनी वाली और हवादार कक्षाएँ ताकि जो बच्चे सुन नहीं सकते वे शिक्षक को स्पष्ट रूप से देख सकें जब वह बात कर रही हो और कम दृष्टि वाले बच्चे बेहतर देख सकें, कक्षा में पर्दे हों ताकि एक ध्यान की कमी

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

वाला बच्चा विचलित नहीं होता है और शिक्षक के पढ़ाने के दौरान बाहर देखता है ... ये सब स्कूल प्रशासक की जिम्मेदारी है, ताकि पहुंच और बाधा मुक्त वातावरण सुनिश्चित हो सके। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रशासक का रवैया अन्य हितधारकों को प्रभावित करेगा। इसलिए, यह सुनिश्चित करके कि प्रशासकों का समावेश के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, सफल समावेशन की दिशा में एक प्रमुख मील का पत्थर हासिल किया जा सकता है।

भारत सरकार ने समावेशी शिक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। इसे सफल बनाने के लिए, सभी हितधारकों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की आवश्यकता है ताकि समावेशी शिक्षा को सही मायने में हासिल किया जा सके। आखिरकार, सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त करना बच्चे का अधिकार है।

Unit :– 3.5 Teacher preparation for inclusive education (समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक तैयारी) – समावेशी शिक्षा के एक महत्वपूर्ण तत्व में यह सुनिश्चित करना शामिल है कि सभी शिक्षक सभी छात्रों को पढ़ाने के लिए तैयार हैं। समावेश को तब तक महसूस नहीं किया जा सकता जब तक कि शिक्षक परिवर्तन के सशक्त एजेंट न हों, मूल्यों, ज्ञान और दृष्टिकोण के साथ जो प्रत्येक छात्र को सफल होने की अनुमति देते हैं। शिक्षक मानकों और योग्यताओं में उनके अंतर के बावजूद, शिक्षा प्रणाली शिक्षार्थियों के साथ समस्याओं की पहचान करने और सीखने में बाधाओं की पहचान करने से दूर जा रही है। इस बदलाव को पूरा करने के लिए, शिक्षा प्रणालियों को शिक्षक शिक्षा और पेशेवर सीखने के अवसरों को डिजाइन करना चाहिए जो उन विचारों को दूर करते हैं कि कुछ छात्र कमजोर हैं, सीखने में असमर्थ हैं या अक्षम हैं। शिक्षक शिक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक समावेशी शिक्षा की मांग है लेकिन आश्चर्यजनक रूप से इस महत्वपूर्ण विषय पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।

शिक्षा, समावेशी शिक्षा पर 48 वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनः भविष्य का रास्ता (यूनेस्को IBE 2008), शिक्षक शिक्षा को भविष्य के विकास के लिए एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में पहचाना गया। सभी के लिए शिक्षा (ईएफए) के लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके के रूप में समावेशी शिक्षा को अपनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का आह्वान करते हुए, इसने शिक्षक शिक्षा और विकास के लिए विशिष्ट छह कार्यों की सिफारिश की।

1) शिक्षकों की स्थिति और उनके काम करने की स्थिति में सुधार के लिए काम करके उनकी भूमिका को सुदृढ़ करना, और उपयुक्त उम्मीदवारों की भर्ती के लिए तंत्र विकसित करना, और योग्य शिक्षकों को बनाए रखना जो विभिन्न सीखने की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हैं।

2) विभिन्न छात्र आबादी को पढ़ाने के लिए उपयुक्त कौशल और सामग्री से लैस करके शिक्षकों को प्रशिक्षित करें और स्कूल स्तर पर पेशेवर विकास, समावेश के बारे में सेवा पूर्व प्रशिक्षण, और ध्यान देने योग्य निर्देश जैसे तरीकों के माध्यम से विभिन्न श्रेणियों के शिक्षार्थियों की विविध सीखने की जरूरतों को पूरा करें। व्यक्तिगत शिक्षार्थी का विकास और ताकत।

3) अन्य बातों के साथ–साथ पर्याप्त संसाधनों के प्रावधान के माध्यम से समावेशी शिक्षा पद्धतियों पर शिक्षकों की सेवा–पूर्व और व्यावसायिक प्रशिक्षण में तृतीयक शिक्षा की रणनीतिक भूमिका का समर्थन करना।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

4) समावेशी शिक्षा से संबंधित शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में नवीन अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।

5) स्कूल प्रशासकों को सभी शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं के लिए प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने और अपने स्कूलों में समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कौशल से लैस करना।

6) संघर्ष के समय शिक्षार्थियों, शिक्षकों और स्कूलों की सुरक्षा को ध्यान में रखें।

जबकि ये सिफारिशें भविष्य के विकास के लिए प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करती हैं, वे महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाती हैं जिन्हें संबोधित किया जाना चाहिए यदि भविष्य के विकास को सार्थक और टिकाऊ बनाना है। उदाहरण के लिए, विविध छात्र आबादी को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को उपयुक्त कौशल से लैस करके उन्हें प्रशिक्षित करने का क्या मतलब है? शिक्षकों के सेवा–पूर्व और व्यावसायिक प्रशिक्षण में तृतीयक शिक्षा की कार्यनीतिक भूमिका का समर्थन कैसे किया जा सकता है? समावेशी शिक्षा से संबंधित शिक्षण और अधिगम में किस प्रकार के शोध की आवश्यकता है?

हम जानते हैं कि शैक्षिक प्रावधान में वैश्विक असमानताएं, और देशों के भीतर और देशों के बीच शिक्षक शिक्षा और शिक्षक योग्यता में अंतर, शैक्षिक अवसरों में असमानता को बढ़ाता है। लेकिन जहां एक देश से दूसरे देश में शिक्षक शिक्षा का स्वरूप और संरचना भिन्न हो सकती है, वहीं सभी के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली बुनियादी शिक्षा प्रदान करने में कुछ सामान्य मुद्दे और चुनौतियां काफी हद तक अनसुलझी हैं। समावेशी शिक्षा शिक्षक पेशेवर ज्ञान के एक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है जो शिक्षक शिक्षा के लिए चिंता का एक वैध क्षेत्र है, भले ही रूप या संरचना में राष्ट्रीय अंतर हो। समावेशी शिक्षा के तत्वावधान में, शिक्षक शिक्षा का सुधार योग्यता के प्रकार या स्तर से अधिक हो सकता है, क्योंकि समावेशी शिक्षा सभी के लिए और उसके बारे में है। इसलिए यह सामयिक है कि संभावनाओं का यह विशेष अंक शिक्षक शिक्षा में समावेशी शिक्षा की अवधारणा पर केंद्रित है।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल शिक्षकों को बुनियादी शिक्षा प्रदान करते हैं बल्कि बालिकाओं की शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, जातिवाद के उन्मूलन पर जागरूकता, सभी व्यक्तियों के बीच समान नागरिक अधिकार आदि जैसे मुद्दों के प्रति जागरूकता पैदा करने में भी मदद करते हैं।

Unit :– 4 Curricular strategies for inclusive education (समावेशी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या रणनीतियाँ)

Unit :– 4.1 Curricular challenges for students with disabilities and twice exceptional children (विकलांग छात्रों और दो बार असाधारण बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी चुनौतियां) – समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को उनके पड़ोस के स्कूलों में आयु–उपयुक्त सामान्य शिक्षा कक्षाओं में उच्च गुणवत्ता वाले निर्देश, हस्तक्षेप और समर्थन के साथ शिक्षित कर रही हैः कोर पाठ्यक्रम में सफल। समावेशी स्कूलों में एक सहयोगी और सम्मानजनक स्कूल संस्कृति होती है जहां विकलांग छात्रों को सक्षम माना जाता है, साथियों के साथ सकारात्मक सामाजिक संबंध विकसित होते हैं, और पूरी तरह से स्कूल समुदाय के सदस्य भाग लेते हैं।

जब स्कूल प्रत्येक छात्र को अपने समुदाय में पूरी तरह से शामिल करने के लिए अपनी संस्कृति और निर्देशात्मक प्रथाओं को बदलने की दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो पेशेवरों की सहयोगी टीम बेहतर निर्देशात्मक अभ्यास की ओर ले जाती है। बढ़े हुए सहयोग के साथ, अतिव्यापी, और भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बंटवारे के साथ भूमिका अलगाव की जगह, परिवर्तन आवश्यक है।

जैसे, समावेश एक घटना के बजाय एक परिवर्तन प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में शिक्षकों के कार्य–जीवन में मूलभूत परिवर्तन शामिल हैं, जिससे उनकी पहचान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्रधानाध्यापक और शिक्षक दोनों को छात्र प्रगति और शिक्षक संतुष्टि की निगरानी करने के लिए चुनौती दी जाएगी क्योंकि वे आवश्यकतानुसार समायोजन करना जारी रखेंगे।

नेतृत्व (Leadership) :– संवाद, संसाधनों, या कौशल विकास के माध्यम से साझा समझ के लिए दूरदर्शिता और समर्थन की कमी।

दृष्टिकोण / विश्वास (Attitudes / Beliefs) :– समावेश के दर्शन को अपनाने या मौजूदा प्रथाओं को बदलने की अनिच्छा

निर्देशात्मक अभ्यास (Instructional Practices) :– सामान्य शिक्षा प्रथाओं की अपर्याप्त समझ और कैसे विकलांग छात्र अद्वितीय शिक्षा लक्ष्यों में विशेष निर्देश प्रदान करते हुए सामान्य शिक्षा निर्देश में भाग ले सकते हैं।

व्यावसायिक विकास (Professional Development) :– पर्याप्त कुशल कर्मियों की अनुपस्थिति और समावेशी प्रथाओं को सीखने और लागू करने में पेशेवरों की सहायता के लिए प्रशिक्षण में सीमित निवेश।

संसाधन (Resources) :– सामग्री, उपकरण, और प्रौद्योगिकी के लिए धन की कमी के साथ–साथ भीड़भाड़ वाली सुविधाओं के परिणामस्वरूप बाधाएं और स्टाफ सदस्यों के बीच योजना और सहयोग के लिए अपर्याप्त समय।

शिक्षक तैयारी :– विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम सामग्री और कार्यक्रम के बीच डिस्कनेक्ट करें, सामान्य शिक्षा कक्षाओं में विकलांग छात्रों को सफलतापूर्वक पढ़ाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करें।

भौतिक बाधाएं :– आर्थिक रूप से वंचित स्कूल प्रणाली, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, और खराब देखभाल वाले – उन भवनों के लिए जो पहुंच को प्रतिबंधित करते है।

संगठन (Organization) :– शिक्षा प्रणाली शायद ही कभी सकारात्मक परिवर्तन और पहल के लिए अनुकूल होती है जब निर्णय स्कूल प्रणाली के उच्च स्तरीय अधिकारियों से आते हैं जिनकी पहल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से अधिक कर्मचारी अनुपालन पर केंद्रित होती है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

मानकीकृत आकलन :– सभी छात्रों के लिए मानकीकृत मूल्यांकन जैसे जवाबदेही उपायों पर बढ़ा जोर, कई नीति निर्माताओं के साथ जो समावेशी शिक्षा को नहीं समझते या विश्वास नहीं करते हैं, इसे सार्थक तरीके से आगे बढ़ने से रोकता है।

समावेशी शिक्षा की अनेक बाधाओं को पार करना कठिन होगा। दशकों के शोध विकलांग लोगों के लिए बेहतर परिणाम दिखाते हैं जब उन्हें शामिल किया जाता है। प्रामाणिक समावेशन देश और दुनिया भर के स्कूलों और जिलों में हो रहा है (कई वर्षों से लगभग 90: समावेशन दर या उससे अधिक)। यह प्रगति यूं ही नहीं हुई, बल्कि शैक्षिक दूरदर्शी और प्रभावी समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों के नेतृत्व में सावधानीपूर्वक योजना का परिणाम है।

बाधा के रूप में पाठ्यचर्या: एक कठोर पाठ्यक्रम जो प्रयोग या विभिन्न शिक्षण विधियों के उपयोग की अनुमति नहीं देता है, या जो सीखने की विभिन्न शैलियों को नहीं पहचानता है। किसी भी शिक्षा प्रणाली में, अधिक समावेशी प्रणाली के विकास की सुविधा के लिए पाठ्यक्रम प्रमुख बाधाओं या उपकरणों में से एक है। हमारे देश में पाठ्यक्रम विभिन्न शिक्षार्थियों की एक विस्तृत श्रृंखला की जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ है। इसमें स्थानीय अनुकूलन के लिए या शिक्षकों के लिए प्रयोग करने और नए दृष्टिकोणों को आजमाने के लिए बहुत कम लचीलापन है। ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या के परिणामस्वरूप परीक्षाएं भी सफलता उन्मुख होने के बजाय बहुत अधिक विषयवस्तु उन्मुख होती हैं। यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की उपलब्धि को मापने में भी एक बाधा है।

दो बार असाधारण छात्र (Twice exceptional student) :– एक ''दो बार असाधारण'' (2e) छात्र वह छात्र होता है जिसके पास उच्च बौद्धिक क्षमता या प्रतिभा होती है, साथ ही विकलांगता या सीखने में अंतर होता है। दूसरे शब्दों में, वे दो तरह से असाधारण हैं, इसलिए शब्द ''दो बार असाधारण'' है।

दो असाधारण छात्रों की कई अलग–अलग तरीकों से पहचान की जा सकती है। **उदाहरण के लिए,** एक छात्र के पास डिस्लेक्सिया या एडीएचडी जैसी निदान सीखने की अक्षमता हो सकती है, लेकिन संगीत, गणित या रचनात्मक लेखन जैसे क्षेत्रों में असाधारण प्रतिभा भी दिखाती है। इसके विपरीत, एक छात्र के पास एक विशेष क्षेत्र में उच्च आईक्यू या असाधारण प्रतिभा हो सकती है, लेकिन सामाजिक कौशल या कार्यकारी कामकाज के साथ संघर्ष करना पड़ता है।

दो बार असाधारण छात्रों की पहचान करना और उनका समर्थन करना एक चुनौती हो सकती है, क्योंकि उनकी ताकत और चुनौतियों को हमेशा पहचाना या स्वीकार नहीं किया जा सकता है। शिक्षकों को उनकी सफलता का समर्थन करने के लिए इन छात्रों की जरूरतों को समझना और समायोजित करना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, एक दो बार असाधारण छात्र अपनी प्रतिभा के क्षेत्र में समृद्ध गतिविधियों या उन्नत पाठ्यक्रम के साथ–साथ उनकी विकलांगता या सीखने के अंतर के लिए आवास और समर्थन से लाभान्वित हो सकते हैं। यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि दो बार असाधारण छात्र एक विविध समूह हैं, और उनकी जरूरतें और क्षमताएं व्यापक रूप से भिन्न हो सकती हैं। जैसा कि सभी छात्रों के साथ होता है, व्यक्तिगत समर्थन और आवास उनकी शैक्षणिक और व्यक्तिगत सफलता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

पाठ्यचर्या संबंधी आवश्यकताएं (Curricular Needs) :– दो – असाधारण छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं की योजना बनाते समय, शक्तियों, रुचियों और श्रेष्ठ बौद्धिक क्षमताओं के विकास पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। चूंकि सीखने की अक्षमताएं स्थायी होने की ओर प्रवृत्त होती हैं, इसलिए मुआवजे की रणनीतियों के उपयोग को सिखाना और प्रोत्साहित करना भी महत्वपूर्ण है। इन रणनीतियों में उन्नत आयोजकों, प्रौद्योगिकी, और संचार विकल्पों की एक किस्म का उपयोग शामिल हो सकता है। जिन छात्रों को अल्पकालिक स्मृति में कठिनाई होती है, उन्हें याद रखने की रणनीति सिखाई जानी चाहिए। किसी भी प्रकार की संवर्धन गतिविधि को ताकत और रुचियों को विकसित करने और शिक्षार्थी को चुनौती देने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए।

कार्यक्रमों को अपना ध्यान निःशक्तता को बच्चे की प्रतिभा के विकास और अभिव्यक्ति में बाधक बनने से रोकने पर केन्द्रित करने की आवश्यकता है। छात्रों को उनकी प्रतिभा की प्रकृति के अलावा उनकी सीखने की अक्षमता की प्रकृति को सही ढंग से समझने की कोशिश करते समय मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों को इस बात से अवगत कराते हुए कि किस प्रकार उनकी अक्षमता उनके सीखने में बाधा डालती है, उनके उपहारों को विकसित करने की आवश्यकता है। शिक्षकों को छात्रों को एक स्वस्थ, यथार्थवादी आत्म–अवधारणा को आकार देने में मदद करने की आवश्यकता है जिसमें छात्र अपनी व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों को स्वीकार करते हैं। छात्रों के लिए रणनीतियाँ पेश की जानी चाहिए ताकि वे अपनी सीखने की अक्षमताओं की भरपाई कर सकें। उन्हें सोच और संचार के वैकल्पिक तरीकों को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे अपनी ताकत के अनुसार सीख सकें ।

वैद्य (1993) यह भी बताते हैं कि जहां कई माता–पिता अपने प्रतिभाशाली बच्चे की बौद्धिक क्षमता की उच्च गुणवत्ता से परिचित हैं, वहीं वे बच्चे की सीखने की अक्षमता से उत्पन्न कठिनाइयों को दूर करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और उनकी प्रतिभा को पोषित करने के महत्व की उपेक्षा कर रहे हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि माता–पिता और शिक्षक प्रतिभा और सीखने की अक्षमता के संयोजन को समझें।

दो बार – असाधारण छात्रों को एक उपयुक्त पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है जो उनकी दोनों विशेष शिक्षा आवश्यकताओं को संबोधित करता है। ये जरूरतें उनकी विशिष्ट बौद्धिक प्रतिभा और उनकी विशिष्ट सीखने की अक्षमता से संबंधित हैं। छात्रों को कमजोर क्षेत्रों में सहायता की आवश्यकता होती है, लेकिन उन्हें अपने उपहारों को पहचानने और विकसित करने के लिए भी समय की आवश्यकता होती है। सभी छात्रों की तरह, उन्हें विशेष रू॰ से संज्ञानात्मक अनुभवों को समृद्ध और उत्तेजित करने की आवश्यकता होती है जहां वे समस्या–समाधान क्षमताओं और स्वतंत्र शोध कौशल का उपयोग कर सकते हैं।

प्रतिभाशाली / सीखने वाले विकलांग छात्रों को एक ऐसे कार्यक्रम की आवश्यकता होती है जो चुनौतीपूर्ण हो और फिर भी कमजोरियों को समायोजित करने के लिए संरचना और रणनीति प्रदान करता हो। जब एक छात्र की प्रतिभा की पहचान की जाती है और उसका पोषण किया जाता है, तो छात्र की ओर से कार्यों को पूरा करने के लिए और अधिक प्रयास करने की इच्छा बढ़ जाती है। छात्रों को उनकी उपलब्धियों और ताकत पर गर्व करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह छात्रों को ताकत विकसित करके कमजोरियों की भरपाई करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

Unit :– 4.2 Need for curricular adaptations (पाठ्यचर्या अनुकूलन की आवश्यकता) – हर बच्चा अलग होता है और हर बच्चा सीख सकता है। अलग–अलग बच्चे अपने–अपने स्तर पर और अलग–अलग माध्यमों से सीखते हैं। एक शिक्षक के रूप में हमें प्रत्येक बच्चे की जरूरतों को जानना चाहिए। शिक्षकों के रूप में हमें यह पता लगाना चाहिए कि आपकी कक्षा के बच्चों के लिए क्या कारगर है और उन विचारों को अपने पाठों में लाने के लिए रचनात्मक तरीके खोजें।

हमारे स्कूल आज सबसे बड़ी, सबसे विविध छात्र आबादी को पहले से कहीं अधिक उच्च मानकों के लिए शिक्षित कर रहे हैं। हमने जिस विविधता के बारे में बात की है, उसे पूरा करने के लिए, ''नियमित पाठ्यक्रम के अनुकूलन की आवश्यकता है, जिसमें लक्ष्यों और सामग्री में संगठनात्मक संशोधन शामिल हैं।

समावेशी कक्षा में शिक्षकों की आवश्यकता होती है ताकि वे पाठ्यचर्या में संशोधन या विभेदीकरण के माध्यम से विद्यार्थियों की विभिन्न अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। इसलिए पाठ्यचर्या अनुकूलन एक सतत गतिशील प्रक्रिया है जो विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अध्ययन के निर्धारित कार्यक्रम को संशोधित और अनुकूलित करती है।

पाठ्यचर्या संशोधन में पाठ्यक्रम में शैक्षिक घटकों की एक श्रृंखला में परिवर्तन शामिल है, जैसे सामग्री ज्ञान, निर्देश की विधि, और छात्र के सीखने के परिणाम, विविध छात्र आवश्यकताओं के लिए सामग्री के संशोधन के माध्यम से। **उदाहरण के लिए:** विभिन्न दृश्य सहायता का उपयोग करना, पाठ का विस्तार करना, अधिक ठोस उदाहरणों की योजना बनाना, व्यावहारिक गतिविधियाँ प्रदान करना, छात्रों को सहकारी समूहों में रखना, पाठ से पहले पूर्व–शिक्षण कुंजी या शब्द।

आज की कक्षाएँ स्वभाव से विविध और समावेशी हैं। निर्देश और मूल्यांकन का अंतर और सार्वभौमिक डिजाइन के सिद्धांत अब शिक्षकों के लिए मान्यता प्राप्त अभ्यास हैं। भेदभाव और सार्वभौमिक डिजाइन दोनों ही लक्ष्य निर्धारित करने, लचीली सामग्री और मीडिया को चुनने या बनाने और मूल्यांकन के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। भेदभाव और सार्वभौमिक डिजाइन करने के लिए, शिक्षकों को आवास की एक श्रृंखला (प्रतिनिधित्व के कई साधन, अभिव्यक्ति या जुड़ाव) के बारे में पता होना चाहिए जो कक्षा में प्रत्येक छात्र को सफल होने में मदद करने के लिए आवश्यक हो सकता है। ये आवास अनुकूलन या संशोधनों का रूप ले सकते हैं।

विशेष जरूरतों और महत्वपूर्ण सीखने की चुनौतियों वाले कई छात्र बिना या मामूली अनुकूलन वाले विषयों या पाठ्यक्रमों के लिए सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम होंगे। कुछ अनुकूलन के साथ कुछ विषयों या पाठ्यक्रमों के सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं। एक छोटे से अनुपात को व्यक्तिगत परिणामों, पाठ्यचर्या से भिन्न लक्ष्यों पर काम करने की आवश्यकता होगीय इसे संशोधन कहा जाता है।

पाठ्यचर्या अनुकूलन क्यों आवश्यक है (Why is Curriculum Adaptation necessary) :–

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- पाठ्यचर्या अनुकूलन यूएनसीआरपीडी 2006 द्वारा अनिवार्य उचित आवास का एक रूप है, जो मुख्यधारा की कक्षा में सीखने की कठिनाइयों वाले छात्रों के होने पर शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाता है।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन सामग्री को सरल और कम करने के लिए किया जाता है ताकि कठिनाइयों वाले शिक्षार्थी पाठ्यक्रम के सबसे महत्वपूर्ण भाग को अवशोषित कर सकें।
- पाठ्यक्रम का अनुकूलन सुनिश्चित करता है कि सभी शिक्षार्थियों को गुणवत्तापूर्ण और सार्थक सीखने के अनुभव प्राप्त हों।
- सीखने में कठिनाई वाले बच्चे जब विषय को समझने की बात करते हैं तो वे खुद को अलग–थलग महसूस नहीं करते हैं।

Unit :– 4.4 Types of curricular adaptations (पाठ्यचर्या अनुकूलन के प्रकार) – समावेशी शिक्षा में अनुकूलन का अर्थ सामान्य बालकों की शिक्षा के साथ विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले बालकों की शिक्षा को सामंजस्य पूर्ण, समायोजन योग्य तथा समरस बनाने में अनुकूलता लाना है। विशेष बालकों को सामान्य बालकों के साथ शिक्षा देने में सामान्य बालकों को गति के अवरोध का सामना करना पड़ता है तथा कम दृ ष्टि वाले, कम सुनने वाले, अस्थि बाधाओं से पीडित चलने, उठने, लिखने आदि में कमजोर एवं मंदबुद्धि वाले या धीमे अधिगमकर्ताओं को शिक्षण की तेज गति, कठिन विषय–प्रसंग,शिक्षक द्वारा श्यामपट पर लिखे छोटे अक्षर शिक्षक की आवाज का अनुकूल न होना, बेठने की सीट का आरामदायक न होना, पेन या कलम पकड़कर लिखने में परेशानी अनुभव करना इत्यादि भिन्न–भिन्न अवरोध का सामना करना पडता है। विषय शिक्षण के साथ–साथ पाठ्यक्रम, अधिगम, पाठ्यसहगामी क्रियाओं में सहभागिता, खेल खेलने में, आदि में भी विशेष बालक अपनी शारीरिक या मानसिक निःशक्ताओं के कारण असविधा का अनुभव करते हैं। यह विसंगति विभिन्न श्रेणी के निःशक्त बालकों की अलग–अलग हो सकती है। शिक्षक को विशेष बालकों की असमर्थताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण में अतिरिक्त अनुदेशन देना तथा अतिरिक्त मार्ग दर्शन देकर अनुकूलन करना होता है। उसे शिक्षण की सहायक सामग्री को भी विशेष बालकों के अनुकूल करने हेतु भिन्न–भिन्न प्रयत्न करने होते हैं। सारांश में अनुकूलन समावेशी शिक्षा में विशेष बालकों को समायोजित करने के प्रयासों को कहा जाता है।

विशेष बालकों हेतु पाठ्यक्रम अनुकूलन का अर्थ समझने के पूर्व पाठ्यक्रम की संकल्पना को समझना होगा। रॉबर्ट एम.डब्ल्यू ट्रेवर्स ने पाठ्यक्रम की संकल्पना इन शब्दों में व्यक्त की है–"एक शताब्दी पूर्व पाठ्यक्रम की संकल्पना उस पाठ्य सामग्री का बोध कराती थी जो छात्रों के लिए निर्धारित की जाती थी, परन्तु वर्तमान समय में पाठ्यक्रम की संकल्पना में परिवर्तन आ गया है । यद्यपि प्राचीन संकल्पना अभी भी पूर्णरूपेण लुप्त नहीं हुई है, लेकिन अब माना जाने लगा है कि पाठ्यक्रम की संकल्पना में छात्रों को ज्ञान वृद्धि के लिए नियोजित सभी स्थितियाँ, घटनाएं तथा उन्हें उचित रूप में क्रमबद्ध करने वाले सैद्धान्तिक आधार समाहित रहते हैं।" वाल्टर एस. मनरो के अनुसार, "पाठ्यक्रम को किसी विद्यार्थी द्वारा लिये जाने वाले विषयों के रूप में परिभाषित नहीं किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम की कार्यात्मक संकल्पना के अनुसार इसके अंतर्गत वह सब अनुभव आ जाते हैं जो विद्यालय में शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं।"

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने भी लगभग इन्हीं अर्थ में पाठ्यक्रम को इन शब्दों से बतलाया है, "पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परम्परागत रूप से पढ़ाए जाते हैं, बल्कि इसमें अनुभवों की वह संपूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं छात्रों के अनेक औपचारिक संपर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का संपूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है जो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है और उनके संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है ।"

विशेष बालकों के लिए समावेशी विद्यालय में पाठ्यक्रम के अनुकूलन से अभिप्राय पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन संबंधी समायोजन से है। यह अनुकूलन पाठ्य विषयों को लोचदार या परिवर्तनशील बनाकर, अनुकूलन प्रधान शिक्षण विधियों द्वारा, विशेष विषयध्रकरण पर अनुकूलन प्रधान संदर्भ पुस्तकें बालकों को उपलब्ध कराकर, विशेष निःशक्तता के विशेषज्ञ व स्रोत शिक्षण के मार्गदर्शन द्वारा, पाठ्यसहगामी क्रियाओं को निःशक्त बालकों के अनुकूल बनाकर, सहपाठी की सहायता से, विशेष सहायक शिक्षण सामग्रियों के प्रयोग से, आवश्यकता पड़ने पर विशेष कक्षाएं लगाकर, समुचित कक्षा प्रबंधन व शाला प्रबंधन आदि विधियों द्वारा संभव है। नीचे क्रमशः इन विधियों का विवरण उदाहरणों सहित दिया जा रहा है–

1) पाठ्यक्रम को लचीला बनाना – विशेष बालकों की विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम में पढ़ाते समय, प्रायोगिक कार्य करते समय उनके अनुकूल बनाना विषय शिक्षकों का दायित्व है। उदाहरणार्थ यदि मंदबुद्धि बालक अमूर्त विषयों को नहीं समझ पाए हैं तो उसे विश्लेषण प्रधान, उदाहरण दृष्टांतों से युक्त व सरल बनाकर समझाया जा सकता है। पाठ्यक्रम को अनुकूल बनाने हेतु विषय शिक्षक को निःशक्त व वंचित बालकों के जीवन पर आधारित दृष्टांत व उदाहरणों से व्याख्या करनी चाहिए। विषयध्रकरण को सरल व बोधगम्य बनाने हेतु उसे छोटी इकाइयों में विभाजित कर पढ़ाना उपयुक्त होता है ताकि धीमे अधिगमकर्ता बालक समझ सकें। पाठ्य विषय को प्रायोगिक रूप से क्रियात्मक या व्यावहारिक रूप देकर पढ़ाना चाहिए जैसे विज्ञान (रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र) प्रयोगशाला के प्रयोगों द्वारा, नागरिकशास्त्र व सामाजिक विज्ञान के विषयों को क्रियात्मक (कार्यात्मक) रूप देकर जैसे मंत्रिमंडल का गठन कक्षा में बालकों को मंत्री बनाकर दिया जा सकता है। मतदान प्रक्रिया को कक्षा में मतदान केन्द्र बनाकर समझाया जा सकता है। भाषा शिक्षण में नाटक मंचन द्वारा, कविता शासन द्वारा समझाई जा सकती है।

(2) अनुकूल शिक्षण विधियों पर आधारित कक्षा शिक्षण – समावेशी कक्षा में सामान्य व विशेष दोनों प्रकार के बालकों को एक साथ पढ़ाना होता है अतः विषय शिक्षकों को निःशक्त बालकों की पृथक–पृथक शारीरिक व मानसिक समस्याओं के अनुसार कक्षा शिक्षण में कई शिक्षण विधियों, युक्तियों, शिक्षण सूत्रों को सहारा लेना होता है। उदाहरणार्थ श्रवण बाधित बालक कम सुन पाते हैं अतः शिक्षक को जोर से बोलना चाहिए। वे यदि बहुत ही कम सुन पाते हैं तो शिक्षक को उस छात्र के निकट बैठे संगी–साथी को बोली गई बातों की कार्बन कॉपी लिखकर श्रवणबाधित को देने की व्यवस्था करनी चाहिए । टेपरिकॉर्डर पर भी शिक्षक का शिक्षण रिकॉर्ड किया जा सकता है जिसे बाद में बालक जोर से बजाकर सुन समझ सकता है। दृष्टिबाधित बालक को कम दिखाई देता है अतः उसकी बैठने की व्यवस्था सामने ब्लेक बोर्ड के पास करनी चाहिए ताकि बड़े–बड़े अक्षरों में शिक्षक द्वारा लिखी बातों को वह देख व समझ सके। एक अस्थिबाधित बालक यदि पैर से निःशक्त है तो उसे उठने–बैठने में परेशानी न हो इसका ध्यान रखते हुए उसकी बैठक

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

व्यवस्था करनी चाहिए। मंदबुद्धि बालकों के समझने में दृश्य श्रव्य सामग्री द्वारा समझाना उपयुक्त रहता है। कक्षा के सभी बालकों के लिए दृश्य श्रव्य सहायक शिक्षण सामग्री रोचक व बोधगम्य होती है।

3) निःशक्त बालकों को सरल संदर्भ पुस्तकें उपलब्ध कराना – विषय शिक्षक को कक्षा शिक्षण में ध्यान रखना चाहिए कि कौनसा बालक पढ़ाए गए विषयध्प्रकरण को समझ नहीं पा रहा है । कक्षा शिक्षण में उस बालक पर यदि देर तक ध्यान दे पाना शिक्षक के लिए संभव न हो तो उसे पृथक से सरल भाषा में प्रकरण से संबंधित पुस्तक उपलब्ध करानी चाहिए। कम नजर वाले बालकों हेतु बड़े अक्षरों में लिखी पुस्तकें, मंद बुद्धि बालक हेतु सचित्र रंगीन पुस्तकें दी जानी चाहिए। इससे बालकों में स्वाध्याय की आदत विकसित होगी। पुस्तक देते समय शिक्षक को विशेष छात्र को प्रकरण का संक्षेप व पृष्ठ क्रमांक बता देना चाहिए।

(4) विशेषज्ञ व स्त्रोत शिक्षकों का मार्गदर्शन – यदि बाधित विशेष बालकों की शिक्षण संबंधी विशेष समस्या है तो संस्था के निःशक्त बालकों के विशेषज्ञ या स्रोत शिक्षकों के पास भेजकर उनकी अधिगम संबंधी समस्या का हल निकालना चाहिए।

5) पाठ्यसहगामी क्रियाओं में अनुकूलन – पाठ्यसहगामी क्रियाएं पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग हैं। इनका क्षेत्र व्यापक है। ये क्रियाएं बालक के सर्वांगीण विकास में उपयोगी होती हैं। इनमें साहित्यिक, सामाजिक, शारीरिक, सांस्कृतिक आदि अनेक गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। निःशक्त बालकों को उनके शारीरिक सामर्थ्य के अनुरूप खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए । मंदबुद्धि तथा धीमे अधिगमकर्ता बालक जिन्हें वाचन, वर्तनी (स्पेलिंग), विराम चिन्हों संबंधी कठिनाई है उनके लिए भाषण गतिविधि, वाद विवाद, निबंध लेखन को बढ़ावा देना चाहिए । विज्ञान प्रदर्शनी,बाल मेला, वार्षिकोत्सव,विद्यालय पत्रिका के लिए कविता लेख आदि गतिविधियों में निशक्त बालकों की सहभागिता को प्रोत्साहित व प्रशंसित किया जाना चाहिए। विषय आधारित क्विज प्रतियोगिताएं भी अच्छी पाठ्य सहगामी गतिविधि हैं।

6) सहपाठी का सहयोग व सहायता – कुछ निःशक्त बालक अपनी सहायता स्वयं करने में असमर्थ रहते हैं। पढ़ते समय कुछ अधिगम छात्र शिक्षण की विषयवस्तु को समझ नहीं पाते हैं। कम सुनने वाले छात्रों के साथ भी कम सुनाई देने के कारण शिक्षक का मंतव्य समझ में नहीं आता। ऐसे ही असमर्थ बालकों के लिए शिक्षकों को उनके निकट बैठने वाले सामान्य छात्र को सहयोग व सहायता करने के निर्देश देना चाहिए । इस व्यवस्था से निःशक्त बालकों को पाठ्यक्रम समझने में अनुकूलन प्राप्त होगा।

(7) सहायक शिक्षण सामग्री से अनुकूलन – पाठ्यक्रम के विषयों कोध्प्रकरणों को रोचक व बोधगम्य बनाने हेतु आधुनिक डिजिटल साधनों स्मार्ट क्लास (जिसमें बड़ा स्क्रीन लगा रहता है और जो कम्प्यूटर से जुड़ा होकर फिल्म जैसा शिक्षण को रूप देता है), टेलीविजन, ओवरहेड प्रोजेक्टर तथा स्क्रीन, वीडियो फिल्म आदि के माध्यम से विषयवस्तु को समझने का प्रयत्न विषय शिक्षकों को करना चाहिए। इससे निःशक्त विशेष बालकों को विषयध्प्रकरण को समझने में आसानी होगी।

Unit :– 4.5 Differentiated instructions and Universal design of learning (विभेदित निर्देश और सीखने का सार्वभौमिक डिजाइन) – विभेदित निर्देश शिक्षण के लिए एक दृष्टिकोण है जिसमें व्यक्तिगत छात्रों की अनूठी जरूरतों, रुचियों और क्षमताओं को पूरा करने के लिए सिलाई निर्देश शामिल है। इसमें शिक्षार्थी की विशेषताओं से मेल खाने के लिए सामग्री, प्रक्रिया और उत्पाद जैसे निर्देश के पहलुओं को

संशोधित करना शामिल है। सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन (यूडीएल) एक ढांचा है जो लचीला, सुलभ सीखने के वातावरण बनाने पर जोर देता है जिसे सभी शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। यूडीएल निर्देश डिजाइन करने पर ध्यान केंद्रित करता है जो एक कक्षा में शिक्षार्थियों की विविधता को संबोधित करने के लिए प्रतिनिधित्व, अभिव्यक्ति और जुड़ाव के कई साधन प्रदान करता है।

यहां एक उदाहरण दिया गया है कि किस तरह अलग–अलग निर्देश और सीखने के लिए यूनिवर्सल डिजाइन (यूडीएल) को कक्षा में लागू किया जा सकता है:

मान लीजिए कि एक शिक्षक अमेरिकी क्रांति पर एक पाठ की योजना बना रहा है। उनके पास अपनी कक्षा में विभिन्न क्षमताओं, रुचियों और सीखने की शैलियों के साथ छात्रों का एक विविध समूह है। निर्देश में अंतर करने के लिए, शिक्षक छात्रों को सामग्री तक पहुँचने के लिए अलग–अलग विकल्प प्रदान कर सकता है। उदाहरण के लिए:

- जो छात्र मजबूत पाठक हैं, उनके लिए शिक्षक पढ़ने और विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक स्रोत दस्तावेज प्रदान कर सकते हैं।
- जिन छात्रों को पढ़ने में कठिनाई होती है, उनके लिए शिक्षक एक वीडियो या ऑडियो क्लिप प्रदान कर सकता है जो अमेरिकी क्रांति की प्रमुख घटनाओं की व्याख्या करता है।
- जो छात्र दृश्य शिक्षार्थी हैं, उनके लिए शिक्षक क्रांति की प्रमुख घटनाओं को चित्रित करने में मदद के लिए चित्र, मानचित्र या चार्ट प्रदान कर सकते हैं।
- उन छात्रों के लिए जो हाथ से चलने वाली गतिविधियों को पसंद करते हैं, शिक्षक उन्हें यह अनुभव करने में मदद करने के लिए एक अनुकरण या भूमिका निभाने वाली गतिविधि प्रदान कर सकते हैं कि क्रांति का हिस्सा बनना कैसा था।

लर्निंग (यूडीएल) के लिए यूनिवर्सल डिजाइन लागू करने के लिए, शिक्षक प्रतिनिधित्व, अभिव्यक्ति और जुड़ाव के कई माध्यमों को शामिल कर सकता है। उदाहरण के लिए:

प्रतिनिधित्व :– शिक्षक अलग–अलग सीखने की शैलियों को समायोजित करने के लिए पाठ, चित्र और वीडियो जैसे सामग्री के कई प्रतिनिधित्व प्रदान कर सकता है।

अभिव्यक्ति :– शिक्षक छात्रों को अपनी समझ प्रदर्शित करने के लिए कई तरीके प्रदान कर सकते हैं, जैसे निबंध लिखना, वीडियो बनाना या पॉडकास्ट बनाना।

जुड़ाव :– शिक्षक उन गतिविधियों की पेशकश कर सकता है जो छात्र की पसंद और स्वायत्तता की अनुमति देती हैं, जैसे कि क्रांति की किस घटना का चयन करना है या अपने निष्कर्षों को कैसे प्रस्तुत करना है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

Unit :– 5.1 Special schools and inclusive schools (विशेष स्कूल और समावेशी स्कूल) – विशेष शिक्षा एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा के बीच मुख्य अंतर यह है कि विशेष शिक्षा शिक्षा की एक अलग प्रणाली है जो मुख्यधारा की शिक्षा के बाहर विकलांग बच्चों की जरूरतों को पूरा करती है, जबकि एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा एक ऐसी सेटिंग के भीतर होती है जहां विकलांग छात्र सीखते हैं विकलांग साथियों के साथ।

विशेष शिक्षा में, एक छात्र के लिए आवश्यक सेवा और सहायता दूसरे छात्र की आवश्यकता से भिन्न हो सकती है। विशेष शिक्षा में एक व्यक्ति–आधारित दृष्टिकोण होता है और छात्रों को शिक्षा में प्रगति करने के लिए आवश्यक संसाधन देने पर ध्यान केंद्रित करता है। एकीकृत कक्षा के भीतर की स्थिति काफी अलग है, क्योंकि छात्र को नियमित पाठ्यक्रम के अनुकूल बनाने के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होगी। जब समावेशी शिक्षा की बात आती है तो यह स्थिति और बदल जाती है। समावेशी कक्षा आम तौर पर छात्रों के विभिन्न सीखने के पैटर्न को स्वीकार करती है और प्रत्येक छात्र की अनूठी और व्यक्तिगत आवश्यकता को पूरा करने के लिए खुद को अनुकूलित करती है।

विशेष शिक्षा क्या है ?

विशेष शिक्षा में विकलांग छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अलग–अलग तरीकों का उपयोग करके विभिन्न सेटिंग्स में विभिन्न प्रकार की सेवाएं शामिल हैं, जिन्हें मुख्यधारा की कक्षाओं में पूरा नहीं किया जा सकता है। शिक्षा विशेषज्ञ इस दृष्टिकोण के लिए एक वैकल्पिक शब्द के रूप में ''विशेष आवश्यकता शिक्षा'' शब्द का भी उपयोग करते हैं। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि विकलांग बच्चों की कुछ विशेष आवश्यकताएं हैं, और उन्हें समान जरूरतों वाले अन्य बच्चों के साथ एक अलग सेटिंग में अध्ययन करने की आवश्यकता है।

हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को चौबीसों घंटे एक विशेष कक्षा में अलग से रखा जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ छात्र अपना अधिकांश समय सामान्य शिक्षा कक्षा में बिता सकते हैं। उन्हें नियमित कक्षाओं में अपने साथियों के साथ सीखने के लिए बस विशेष आवास की आवश्यकता हो सकती है। कुछ लोग किसी विशेषज्ञ की देखरेख में संसाधन कक्ष में बस कुछ ही घंटे बिता सकते हैं, जबकि अन्य को एक अलग स्कूल में भाग लेने की आवश्यकता हो सकती है जो सीखने की अक्षमता वाले बच्चों को पढ़ाने में माहिर है। संक्षेप में, एक बच्चे की विशिष्ट जरूरतें शिक्षण की प्रकृति (पाठ्यक्रम, सेटिंग, आदि) को निर्धारित करती हैं।

समावेशी शिक्षा क्या है

समावेशी शिक्षा की प्रणाली में सभी विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के साथ–साथ सामान्य छात्रों को समान लाभ मिलता है। इसके अलावा, इसमें स्पष्ट भागीदारी भी शामिल है। विशेष शिक्षा प्रणाली की तुलना में, समावेशी शिक्षा न केवल विशेष आवश्यकता वाले छात्रों पर बल्कि अन्य पर भी ध्यान केंद्रित करती है। इसलिए, हम समावेशी दृष्टिकोण को 'सभी के लिए शिक्षा' मानते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

इस प्रणाली के भीतर, छात्रों को मुख्यधारा की शिक्षा में फिट होने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय स्कूल सभी की जरूरतों को समायोजित करने के लिए बदलता है। इसलिए, यह छात्रों की विविध सीखने की शैलियों और गति का स्वागत करता है। इसके अलावा, यह प्रत्येक छात्र की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न तकनीकों को नियोजित करता है। इसके अलावा, शिक्षा की विशेष और एकीकृत प्रणालियों की तुलना में, समावेश कहीं अधिक प्रगतिशील है क्योंकि यह उन बाधाओं को खारिज करता है जो छात्रों में बाधा डालती हैं और सभी समावेशी भागीदारी को प्रोत्साहित करती हैं।

विशेष शिक्षा ,एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा के बीच अंतर –

परिभाषा (Definition) :– विशेष शिक्षा शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली है जो मुख्यधारा की शिक्षा से बाहर विकलांग बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रिया करती है। एकीकृत शिक्षा सामान्य कक्षा के भीतर प्रदान की जाती है जहां विशेष आवश्यकता वाले छात्र विकलांगों के बिना अपने साथियों के साथ सीखते हैं। समावेशी शिक्षा एक ऐसी प्रणाली है जहां सभी विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के साथ–साथ सामान्य छात्रों को समान लाभ मिलता है, छात्रों की विविधता का स्वागत करते हैं और तदनुसार बदलते हैं।

दृष्टिकोण :– विशेष शिक्षा की प्रणाली के भीतर, दृष्टिकोण अधिक व्यक्तिगत केंद्रित है, जहां शिक्षण का तरीका और सामग्री अलग–अलग छात्रों की जरूरतों के अनुसार अलग–अलग डिजाइन की जाती है। हालांकि, एक एकीकृत कक्षा के भीतर, एक विशेष आवश्यकता वाले छात्र से सामान्य पाठ्यक्रम के अनुकूल होने की उम्मीद की जाती है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि समावेशी कक्षा में सभी के लिए शिक्षा का दृष्टिकोण अपनाया जाता है।

चुनौती का स्तर :– विशेष शिक्षा और समावेशी शिक्षा की तुलना में, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए एकीकृत शिक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें एक सामान्य पाठ्यक्रम के अनुकूल होने की मांग करती है।

सेटिंग :– एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा सामान्य कक्षा के भीतर होती है। लेकिन विशेष शिक्षा सामान्य कक्षा, संसाधन कक्ष या किसी विशेष विद्यालय में भी हो सकती है। सेटिंग छात्र की आवश्यकता पर निर्भर करती है।

आत्मविश्वास में वृद्धिः एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करती है क्योंकि यह उन्हें अपने कम चुनौती वाले साथियों के साथ एक ही कक्षा में रहने का मौका देती है। इसके विपरीत, एक अलग वातावरण में हो रही विशेष शिक्षा के भीतर, विशेष आवश्यकता वाले छात्र एक अलग संस्कृति के अनुकूल होने लगते हैं। नतीजतन, उन्हें अपने परिवारों, साथियों और समुदायों के साथ सामंजस्य बिठाना और घुलना–मिलना मुश्किल हो सकता है।

विशेष शिक्षा एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा के बीच मुख्य अंतर यह है कि विशेष शिक्षा प्रणाली में एक व्यक्तिगत छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण होता है जबकि एकीकृत शिक्षा विकलांग छात्रों को बड़े समूह का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करती है, और एक समावेशी प्रणाली ''शिक्षा – के

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

लिए'' – सभी ''दृष्टिकोण। इसके अलावा, विशेष शिक्षा की तुलना में, एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के आत्म–सम्मान और आत्म–अवधारणा के उत्थान में अधिक आशाजनक हैं।

Unit :– 5.2 Special educators and general teachers (विशेष शिक्षक और सामान्य शिक्षक) – सामान्य शिक्षा शिक्षक और विशेष शिक्षा शिक्षक कई समान कर्तव्यों को साझा करते हैं। वास्तव में , वे बहुत से समान छात्रों को साझा करते हैं। इसका कारण यह है कि पहचाने गए और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे अक्सर दिन का एक हिस्सा सामान्य शिक्षा कक्षा में बिताते हैं और दिन का एक हिस्सा एक अलग स्थान में अधिक गहन सेवाएं प्राप्त करते हैं। हालाँकि, शिक्षण भूमिका में महत्वपूर्ण अंतर हैं। विशेष शिक्षा शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए केस मैनेजर की सेवा कर सकता है। केस मैनेजमेंट में प्रत्यक्ष सेवाएं प्रदान करने से लेकर प्रशासनिक कर्तव्यों को पूरा करने तक सब कुछ शामिल है। कई विशेष शिक्षा शिक्षण भूमिकाएँ हैं, और ये अलग–अलग तरीकों से सामान्य शिक्षा शिक्षण भूमिकाओं से भिन्न होंगी।

विशेष शिक्षा शिक्षण भूमिकाएँ (Special Education Teaching Roles) :– एक विशेष शिक्षा शिक्षक के पास एक स्व–निहित कक्षा हो सकती है या संसाधन कक्ष में सहायता प्रदान कर सकती है। कुछ विशेष शिक्षा शिक्षक सामान्य शिक्षा शिक्षकों के साथ एक समावेशन सेटिंग में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सेवा करने के लिए टीम बनाते हैं। विशेष शिक्षा शिक्षक से अन्य शिक्षकों के लिए संसाधन की सेवा करने की उम्मीद की जा सकती है, जिससे उन्हें पाठ्यक्रम, प्रबंधन प्रणाली और भौतिक वातावरण को संशोधित करने में मदद मिलती है।

बहुत गहन आवश्यकता वाले बच्चे अक्सर अपना अधिकांश दिन एक आत्म–निहित कक्षा में बिताते हैं। इन बच्चों में शारीरिक चुनौतियों सहित बौद्धिक अक्षमता, आत्मकेंद्रित, अंधापन या बहु–विकलांगता हो सकती है। बच्चा गतिशीलता या संचार साधनों का उपयोग कर सकता है और उसे गैर–शैक्षणिक कार्यों में सहायता की आवश्यकता हो सकती है। एक विशेष शिक्षा शिक्षक को आमतौर पर निर्देशात्मक सहायकों की सहायता प्राप्त होगी जो शैक्षणिक सहायता प्रदान करते हैं और कम स्वतंत्र बच्चों को बाथरूम तक ले जाने जैसे अन्य कर्तव्यों को संभालते हैं।

एक विशेष शिक्षा कक्ष में बच्चों की संख्या अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग होगी लेकिन आम तौर पर छोटी होगीः आठ या तो। एक शिक्षक को कम संख्या में बच्चों को अच्छी तरह से जानना होगा। इस प्रकार यह स्थिति उन लोगों के लिए उपयुक्त हो सकती है जो अपने रिश्तों और दैनिक दिनचर्या में गहराई से अधिक गहराई पसंद करते हैं। विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के एक बड़े प्रतिशत को अपने व्यवहार या ध्यान के प्रबंधन के लिए गहन सहायता की आवश्यकता होती है।

एक संसाधन शिक्षक एक दिन या सप्ताह के दौरान कई बच्चों के साथ काम कर सकता है, लेकिन आम तौर पर किसी भी समय उनमें से केवल एक छोटे समूह के साथ काम करेगा। उनसे ग्रेड स्तरों पर अकादमिक पाठ्यक्रम के जानकार होने की उम्मीद की जाएगी, लेकिन शैक्षणिक शिक्षण प्रारंभिक स्तर पर सामान्य कक्षा शिक्षण से काफी अलग होगा। पढ़ने, लिखने और गणित पर अधिक ध्यान देने के साथ आम तौर पर कम चौड़ाई होगी।

विशेष शिक्षा के लिए संक्रमण करने वाले शिक्षकों को पेसिंग में महत्वपूर्ण बदलाव के लिए तैयार रहना चाहिए, स्वयं निहित विशेष शिक्षा कक्षाओं में छात्र पढ़ना जैसे अकादमिक कौशल सीखते हैं। हालांकि, दोहराव की बढ़ी हुई आवश्यकता शिक्षण को एक अलग एहसास दे सकती है। एक आत्मनिर्भर गहन आवश्यकता शिक्षक दिन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कार्यात्मक कौशल सिखाने में खर्च कर सकता है। बेशक छोटे बच्चों के शिक्षक भी कुछ समय कार्यात्मक कौशल सिखाने में लगाते हैं। एक अंतर यह है कि विशेष शिक्षा शिक्षक को उन्हें और अधिक व्यवस्थित तरीके से पढ़ाने की आवश्यकता होगी – और उन्हें पढ़ाए जाने वाले दस्तावेज।

केस प्रबंधन और प्रशासनिक कर्तव्य (Case Management and Administrative Duties) :– एक विशेष शिक्षा शिक्षक व्यक्तिगत निर्देश प्रदान करने और समन्वय करने के लिए जिम्मेदार है। विकलांग शिक्षा अधिनियम (आईडीईए) के तहत विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के पास व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम, या आईईपी हैं, जो उनके सीखने का मार्गदर्शन करते हैं। IEPs को एक टीम द्वारा विकसित किया जाता है। सामान्य शिक्षा शिक्षक के पास अक्सर कुछ विशेष आवश्यकता वाले छात्र होंगे जिनके लिए उन्हें आईईपी बैठकों में भाग लेना होगा। विशेष शिक्षा शिक्षक के पास न केवल अधिक आईईपी छात्र होंगे बल्कि आम तौर पर आईईपी लिखने और समीक्षा करने में नेतृत्व की भूमिका होगी। दस्तावेज अक्सर 20 से अधिक पृष्ठ चलाता है। केस मैनेजर के रूप में, विशेष शिक्षा शिक्षक कानूनों और विनियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होंगे– और आमतौर पर शेड्यूलिंग और समन्वय के लिए भी जिम्मेदार होंगे।

कागजी कार्रवाई हताशा का एक अक्सर उद्धृत क्षेत्र है। सामान्य शिक्षा और विशेष शिक्षा शिक्षकों दोनों के पास बड़ी मात्रा में कागजी कार्रवाई पूरी करने के लिए है, लेकिन फिर से, कुछ अंतर हैं। विशेष शिक्षा शिक्षक अक्सर पाते हैं कि उनकी अधिक कागजी कार्रवाई ''उच्च दांव'' है और इसमें से कम प्रत्यायोजित है। विशेष शिक्षा शिक्षकों को यह दिखाने के लिए विस्तृत रिकॉर्ड बनाए रखना चाहिए कि विकलांग बच्चों को उनकी मदद मिल रही है। के लिए पात्र निर्धारित किया गया है। उन्हें इस तरह से प्रगति का दस्तावेजीकरण भी करना चाहिए जो कानूनी जांच के दायरे में आ जाए। यहां तक कि वे बच्चे जो अभी तक विशेष शिक्षा प्रणाली में नहीं हैं, वे भी प्रलेखन आवश्यकताओं के अधीन हैं।

सभी शिक्षक गोपनीय जानकारी के लिए गुप्त होते हैं, विशेष शिक्षा शिक्षक, हालांकि, गोपनीय जानकारी के अपने हिस्से की तुलना में खुद को अधिक सुरक्षित पाते हैं। गोपनीयता बनाए रखने की आवश्यकता का असर इस बात पर पड़ सकता है कि स्वयंसेवी सेवाओं के लिए किसे अनुमति दी गई है।

Unit :– 5.3 Social welfare dept and Dept of education (समाज कल्याण विभाग और शिक्षा विभाग)

- **समावेशन में समाज कल्याण विभाग की भूमिका (Role of Social welfare dept in inclusion)**
- **Scheme of Assistance to Disabled Persons for Purchase / Fitting of Aids and Appliances (ADIP Scheme)**

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

➢ विकलांग व्यक्तियों को सहायक उपकरण और उपकरणों की खरीद/फिटिंग के लिए सहायता योजना (एडीआईपी योजना)

एडीआईपी योजना 1981 से चल रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य जरूरतमंद विकलांग व्यक्तियों को टिकाऊ, परिष्कृत और वैज्ञानिक रूप से निर्मित, आधुनिक, मानक सहायता और उपकरणों की खरीद में सहायता करना है जो विकलांगों के प्रभाव को कम करके उनके शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पुनर्वास को बढ़ावा दे सकते हैं। उनकी आर्थिक क्षमता में वृद्धि। विकलांगों को उनके स्वतंत्र कामकाज में सुधार लाने और विकलांगता की सीमा और माध्यमिक विकलांगता की घटना को रोकने के उद्देश्य से सहायक उपकरण दिए जाते हैं। योजना के तहत आपूर्ति की जाने वाली सहायता और उपकरणों के पास उचित प्रमाणीकरण होना चाहिए। यह योजना एक सहायक उपकरण प्रदान करने से पहले, जहां कहीं आवश्यक हो, सुधारात्मक सर्जरी के संचालन की भी परिकल्पना करती है। योजना के तहत विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों (भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिमको)/राष्ट्रीय संस्थान/समग्र क्षेत्रीय केंद्र/जिला विकलांग पुनर्वास केंद्र/राज्य विकलांग विकास निगम/एनजीओ आदि) को खरीद के लिए अनुदान सहायता जारी की जाती है और सहायक उपकरणों और सहायक उपकरणों का वितरण।

पात्रता (Eligibility) – निम्नलिखित सभी शर्तों को पूरा करने वाला व्यक्ति पात्र है:

1. किसी भी उम्र का भारतीय नागरिक।
2. 40 % या अधिक विकलांगता है। (अपेक्षित प्रमाण पत्र होना चाहिए)
3. मासिक आय, रु.20000 से अधिक नहीं।
4. आश्रितों के मामले में माता – पिताध्अभिभावकों की आय 20000 रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।
5. पिछले 3 वर्षों के दौरान इसी उद्देश्य के लिए से सहायता प्राप्त नहीं होनी चाहिए। कोई स्रोत। हालांकि 12 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए यह सीमा एक साल होगी।.

समावेशन में शिक्षा विभाग की भूमिका (Role of Dept of education in inclusion) :– निदेशालय शिक्षा (डीओई) अपनी सरकार में विकलांग बच्चों (सीडब्ल्यूडी) के लिए समावेशी शिक्षा और आवश्यकता आधारित शैक्षिक सहायता प्रदान कर रहा है। स्कूल। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई), 2009 और विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम (आरपीडब्ल्यूडी), 2016 के प्रावधानों के तहत समावेशी शिक्षा की नीति को डीओई में लागू किया जा रहा है।

विशेष आवश्यकता वाले समूहों का शिक्षा विभाग (Department of Education of Groups with Special Needs) :– विशेष आवश्यकता वाले समूहों का शिक्षा विभाग 1 सितंबर 1995 को स्थापित किया गया था। तब से विभाग विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और सामाजिक रूप से वंचित समूहों, जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों के बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा था। सभी के लिए एक समावेशी शिक्षा प्रणाली का कार्यान्वयन विशेष रूप से सामाजिक रूप से वंचितों और विकलांग व्यक्तियों के संदर्भ में प्रणालीगत सुधारों का अधिक महत्व रखता है। विभाग इन समूहों से संबंधित बच्चों की समस्याओं और कठिनाइयों पर ध्यान केंद्रित करता है और शिक्षकों और शिक्षक–प्रशिक्षकों के लिए प्रासंगिक सामग्री विकसित करने के लिए परियोजनाएं शुरू करता है। विभाग मुख्य धारा के स्कूलों में इन बच्चों को

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समान शिक्षा के अवसर प्रदान करने के लिए शिक्षकों, शिक्षक–प्रशिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए उपयुक्त रणनीतियों में उन्हें संवेदनशील और प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

शिक्षा में समावेश एक गतिशील घटना है और शिक्षा के लिए इसके सिद्धांत बच्चे की आवश्यकता के अनुसार खुद को संशोधित करने के लिए शिक्षा प्रणाली की मांग पैदा करते हैं, भले ही उसकी योग्यताधविकलांगता कुछ भी हो। समावेशी शिक्षा के सफल और प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शोध के निष्कर्षों के आधार पर विचारशील योजना और समयबद्ध कार्रवाई की आवश्यकता होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए विभाग विकलांग बच्चों और युवाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों और अल्पसंख्यकों के बच्चों को शिक्षा में शामिल करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल रहा है। विभाग ने विकलांग शिक्षार्थियों सहित वंचित समूहों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए कई अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रम और विस्तार गतिविधियाँ शुरू की हैं।

विभाग के प्रमुख कार्य हैं (The Key Functions of the Department are) :–

- मौजूदा गतिविधियों की समीक्षा के लिए अनुसंधान करना और विकलांग व्यक्तियों और अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा के क्षेत्र में नई पहल का सुझाव देना।
- कमजोर समूहों से संबंधित बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने के लिए रणनीति बनाने के लिए शिक्षक–शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए आमने–सामने प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर समावेशी पाठ्यक्रम के विकास का समर्थन करें।
- समावेशी पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए इनपुट प्रदान करना और विशेष आवश्यकता वाले समूहों के दृष्टिकोण से परीक्षा प्रक्रियाओं में सुधार का सुझाव देना।
- शिक्षक गाइड, मैनुअल, समावेश के लिए सूचकांक, प्रशिक्षण दिशानिर्देश और ब्रेल साक्षरता पाठ्यक्रम जैसी शिक्षण शिक्षण सामग्री विकसित करना।
- समावेश के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए केंद्र, राज्यों, गैर सरकारी संगठनों और अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर की एजेंसियों को सलाह देना और उनका समर्थन करना।
- नेटवर्क और विभिन्न विभागों, संगठनों और विशेष फोकस समूहों की शिक्षा में शामिल लोगों के बीच संबंध बनाना।
- अनुसंधान और विकसित सामग्री के लिए समाशोधन गृह के रूप में कार्य करें।

सीडब्ल्यूएसएन के लिए समावेशी शिक्षा पूर्ववर्ती सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) आरटीई और आरएमएसए योजनाओं के प्रमुख हस्तक्षेपों में से एक रही है। वर्ष 2018–19 से, समग्र शिक्षा सीडब्ल्यूएसएन सहित सभी छात्रों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार पर जोर देती है। इस प्रकार, यह हस्तक्षेप समग्र शिक्षा के तहत एक अनिवार्य घटक है। घटक विभिन्न छात्र उन्मुख गतिविधियों के लिए सहायता प्रदान करता है जिसमें सीडब्ल्यूएसएन की पहचान और मूल्यांकन, सहायक उपकरण, उपकरण, सुधारात्मक सर्जरी, ब्रेल किताबें, बड़ी प्रिंट किताबें और वर्दी, चिकित्सीय सेवाएं, शिक्षण–शिक्षण सामग्री का विकास (टीएलएम),

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

सहायक उपकरण शामिल हैं। सीडब्ल्यूएसएन की प्रकृति और जरूरतों के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण और जागरूकता पैदा करने के लिए और उपकरण, पर्यावरण निर्माण और अभिविन्यास कार्यक्रम, निर्देशात्मक सामग्री की खरीद / विकास, पाठ्यक्रम अनुकूलन पर विशेष शिक्षकों और सामान्य शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण, विशेष जरूरतों वाली लड़कियों के लिए वजीफा आदि। यह घटक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (6–14 वर्ष की आयु के भीतर) के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन पर भी जोर देता है। इसके अलावा, स्कूल के भीतर सीडब्ल्यूएसएन की जरूरतों को उचित रूप से पूरा करने के लिए अलग से संसाधन सहायता (विशेष शिक्षकों के वेतन के लिए वित्तीय सहायता) भी उपलब्ध है।

समावेशी शिक्षा कार्यक्रम (Inclusive Education Programmes) :– स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, एमएचआरडी पहले सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए–आरटीई) को 6–14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए मुख्य कार्यक्रम के रूप में लागू कर रहा था। एसएसए ने समावेश की अवधारणा के बारे में अधिक विस्तृत और व्यापक आधारित समझ को अपनाया था, जिसमें सीडब्ल्यूएसएन को शिक्षित करने का एक बहु–विकल्प मॉडल लागू किया जा रहा था।

मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009 सीडब्ल्यूएसएन सहित सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करता है। यह अधिनियम एक कानूनी ढांचा प्रदान करता है जो 6–14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य प्रवेश, उपस्थिति और प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने का अधिकार देता है। धारा 3 (2) आरटीई अधिनियम विकलांग बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा पर जोर देता है। 2012 के संशोधन के अनुसार, यह भी अनिवार्य है कि, बहु औरध्या गंभीर विकलांग बच्चे को घर पर आधारित शिक्षा का विकल्प चुनने का अधिकार है।

माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर सीडब्ल्यूएसएन की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए माध्यमिक स्तर पर विकलांगों के लिए समावेशी शिक्षा (आईईडीएसएस) योजना लागू की गई थी। इस योजना का उद्देश्य आठ साल की प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने वाले सभी विकलांग छात्रों को माध्यमिक स्तर (कक्षा IX से XII) पर सामान्य शिक्षा प्रणाली में समावेशी और सक्षम वातावरण में माध्यमिक स्कूली शिक्षा के चार साल पूरा करने का अवसर देना है।

वर्तमान में, समग्र शिक्षा का उद्देश्य कक्षा I से XII तक की निरंतरता में विशेष आवश्यकता वाले सभी बच्चों (CWSN) को शामिल करना है। समग्र शिक्षा के तहत, वर्ष 2018–19 में, रुपये का परिव्यय। वर्ष 2018–19 के लिए 15,909 संसाधन शिक्षकोंधविशेष शिक्षकों की वित्तीय सहायता (मानदेय/वेतन के लिए) सहित 21,00,918 सीडब्ल्यूएसएन (कक्षा I से XII तक) की शिक्षा के लिए 1023.50 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। साथ ही, रुपये की वित्तीय सहायता। बीआरसी/सीआरसी/यूआरसी स्तर पर कार्यरत 11865 संसाधन व्यक्तियोंध्संसाधन शिक्षकों (सीडब्ल्यूएसएन के लिए) के वेतन के लिए 300 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। इसलिए, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध विशेष शिक्षकों और संसाधन शिक्षकोंध्व्यक्तियों की कुल संख्या 27.774 है।

घटक के उद्देश्य हैं (The objectives of the component are) :–

- स्कूल स्तर पर विकलांग बच्चों की पहचान और उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को आवश्यकता के अनुसार सहायक उपकरणों और उपकरणों, सहायक उपकरणों का प्रावधान।
- संबंधित विभागों के साथ अभिसरण में उनकी आवश्यकता के अनुसार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उपयुक्त शिक्षण शिक्षण सामग्री, चिकित्सा सुविधाएं, व्यावसायिक प्रशिक्षण सहायता, मार्गदर्शन और परामर्श सेवाएं और चिकित्सीय सेवाएं प्रदान करना।
- सामान्य विद्यालय के शिक्षकों को सामान्य कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने और शामिल करने के लिए संवेदनशील और प्रशिक्षित किया जाएगा।
- सीडब्ल्यूएसएन को विशेष शिक्षकों, संसाधन कक्षों की स्थापना, व्यावसायिक शिक्षा, चिकित्सीय सेवाओं और परामर्श आदि के माध्यम से सहायता सेवाओं तक पहुंच प्राप्त होगी।

समग्र शिक्षा के अंतर्गत शामिल सीडब्ल्यूएसएन के प्रावधान (Provisions for CWSN included under Samagra Shiksha) –

- समर्थन रुपये से बढ़ाया गया है। रु. 3000 प्रति बच्चा प्रति वर्ष से रु. 3500 प्रति बच्चा प्रति वर्ष।
- लड़कियों को नामांकन और प्रतिधारण के लिए प्रोत्साहित करने और उनकी स्कूली शिक्षा पूरी करने के लिए विशेष आवश्यकता वाली लड़कियों के लिए वजीफे को पिछले आवंटन से कक्षा IX से XII (RMSA) तक, कक्षा I से XII (समग्र शिक्षा) तक बढ़ा दिया गया है। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से वजीफा प्रदान किया जाता है।
- समग्र शिक्षा योजना के तहत बारहवीं कक्षा तक के बच्चों के लिए गंभीरध्बहु–विकलांग बच्चों को कवर करने वाली गृह आधारित शिक्षा का प्रावधान किया गया है। वर्ष 2018–19 में, घर आधारित शिक्षा के प्रावधान में 43.996 गंभीरध्बहु–विकलांग बच्चों को शामिल किया गया, जिनका परिव्यय रु. 9.22 करोड़।
- प्राथमिक से वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक सीडब्ल्यूएसएन की सीखने की जरूरतों को उचित रूप से संबोधित करने के लिए विशेष शिक्षकों के माध्यम से संसाधन सहायता के लिए आवंटन अलग से किया गया है।
- मौजूदा और नए विशेष शिक्षकों के लिए मानदेयध्वेतन के लिए वित्तीय सहायता (शिक्षकों के वेतन के लिए समग्र शिक्षा मानदंडों के अनुसार)। यह आवंटन रुपये के मानदंड से अधिक है। रु.3500 छात्रोन्मुख घटक की ओर।

अभिसरण के दृष्टिकोण से (From perspective of Convergence) :– उपयुक्त सरकार और स्थानीय प्राधिकरण जैसे सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, विकलांग व्यक्तियों के अधिकारिता विभाग, लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी), सीपीडब्ल्यूडी, ग्रामीण विकास मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय, खेल और युवा और खेल मंत्रालय विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, महिला और बाल विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) आदि प्रयास करेंगे कि उनके द्वारा वित्त पोषित या मान्यता प्राप्त सभी शैक्षणिक संस्थान विकलांग बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करें और उस दिशा में अंत होगा।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- उन्हें बिना किसी भेदभाव के प्रवेश दें और दूसरों के साथ समान रूप से खेल और मनोरंजन गतिविधियों के लिए शिक्षा और अवसर प्रदान करें।
- भवन, परिसर और विभिन्न सुविधाओं को सुलभ बनाना।
- पूर्ण समावेशन के लक्ष्य के अनुरूप शैक्षणिक और सामाजिक विकास को अधिकतम करने वाले वातावरण में व्यक्तिगत या अन्यथा आवश्यक सहायता प्रदान करें।
- सुनिश्चित करें कि नेत्रहीन या बधिर या दोनों व्यक्तियों को शिक्षा सबसे उपयुक्त भाषाओं और संचार के साधनों और साधनों में प्रदान की जाती है।
- निःशक्तता से ग्रस्त प्रत्येक छात्र के संबंध में भागीदारी, उपलब्धि स्तरों के संदर्भ में प्रगति और शिक्षा को पूरा करने की निगरानी करना।
- विकलांग बच्चों और उच्च समर्थन की जरूरत वाले विकलांग बच्चों के परिचारक को भी परिवहन सुविधाएं प्रदान करें।

एनसीईआरटी द्वारा विकसित अभिनव सामग्री (Innovative Material developed by NCERT) –

स्थापना के वर्षों में समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना – विभाग ने एक पूरक प्रारंभिक पठन श्रृंखला के रूप में एक अनुकरणीय, समावेशी शिक्षण सामग्री के रूप में एक पठन श्रृंखला विकसित की है। यह पठन श्रृंखला प्रिंट और डिजिटल स्वरूपों में उपलब्ध है। इसका डिजाइन समावेश के सिद्धांतों और सीखने के लिए यूनिवर्सल डिजाइन (यूडीएल) की अवधारणा पर आधारित है। एक पठन श्रृंखला यह प्रदर्शित करने में अनुकरणीय है कि कैसे यूडीएल के सिद्धांत समावेशी विशेषताओं जैसे कि स्पर्शनीय और उच्च संकल्प दृश्य, सुलभ लिपियों में पाठ आदि के डिजाइन का मार्गदर्शन कर सकते हैं। यह उदाहरण समान रूप से सुलभ विकास के लिए एक दिशा और प्रारंभिक दिशानिर्देश प्रदान करता है। सभी स्कूल चरणों के लिए पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण संसाधनों के रूप में सामग्री।

डिजिटल इंडिया अभियान के साथ विभाग ने रीडिंग सीरीज फॉर 'ऑल' का एक डिजिटल संस्करण भी विकसित किया है। यह डिजिटल संस्करण प्रिंट संस्करण की सभी समावेशी विशेषताओं को बरकरार रखता है और इसकी कार्यक्षमता में अद्वितीय है क्योंकि यह अधिक लचीलेपन की अनुमति देता है और सभी के लिए अपील करने की अधिक गुंजाइश है। बच्चे एक ही उपकरण के माध्यम से सभी 40 कहानी पुस्तिकाओं तक पहुंच सकते हैं। इससे उन्हें किसी भी किताब को फिर से देखने का मौका मिलता है। वे जब भी और जहां चाहें। अपने कंप्यूटर या टैबलेट पर पढ़ने में सक्षम होने के कारण जो गोपनीयता प्रदान की जाती है, वह किसी को आराम से और अपनी गति से पढ़ने की अनुमति देती है इसलिए अर्थ और आनंद के साथ गैर–खतरे वाले वातावरण में पढ़ने को बढ़ावा देती है। प्रत्येक कहानी का परिचय ऑडियो–वीडियो प्रारूप में सांकेतिक और नियमित भाषा दोनों रूपों में उपलब्ध है। यह समावेशी परिवेश में सभी बच्चों के लिए कम उम्र में संचार के नियमित रूप के रूप में सांकेतिक भाषा को पेश करने में मदद करता है। इस पठन श्रृंखला का डिजिटल संस्करण एनसीईआरटी की वेबसाइट और एपथशाला पोर्टल पर उपलब्ध है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

Unit :– 5.4 Special and general teacher education programs (विशेष और सामान्य शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम)

विशेष शिक्षक – विशेष शिक्षा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को विशेष रूप से भावी शिक्षकों को ज्ञान और कौशल प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो उन छात्रों के साथ काम करने के लिए आवश्यक हैं, जिनमें शारीरिक, भावनात्मक, व्यवहारिक और बौद्धिक अक्षमताओं सहित कई तरह की अक्षमताएँ हैं। ये कार्यक्रम प्रत्येक छात्र की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत निर्देश, सहायता और आवास प्रदान करने के लिए शिक्षकों को तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

विशेष शिक्षा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में कोर्सवर्क में आमतौर पर विकलांगता जागरूकता और वकालत, निर्देशात्मक तरीके, व्यवहार प्रबंधन और सहायक तकनीक में कक्षाएं शामिल होती हैं। शिक्षक यह भी सीखते हैं कि विकलांग छात्रों के लिए सर्वोत्तम संभव सीखने का वातावरण प्रदान करने के लिए व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ (IEPs) कैसे विकसित करें और माता–पिता, पैराप्रोफेशनल और अन्य विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम करें।

सामान्य शिक्षक – दूसरी ओर, सामान्य शिक्षा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षकों को उन छात्रों के साथ काम करने के लिए तैयार करने के लिए तैयार किए गए हैं जिनमें विकलांग नहीं हैं। ये कार्यक्रम भावी शिक्षकों को शिक्षाशास्त्र, विषय वस्तु सामग्री और कक्षा प्रबंधन की व्यापक समझ प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सामान्य शिक्षा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में कोर्टवर्क में आमतौर पर शिक्षण विधियों, शैक्षिक मनोविज्ञान, पाठ्यक्रम विकास और मूल्यांकन में कक्षाएं शामिल होती हैं। शिक्षक यह भी सीखते हैं कि सकारात्मक और आकर्षक कक्षा का माहौल कैसे बनाया जाए, विविध छात्र आबादी के साथ कैसे काम किया जाए और कक्षा के व्यवहार को कैसे प्रबंधित किया जाए।

विशेष और सामान्य शिक्षा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम दोनों में आम तौर पर पर्यवेक्षित छात्र शिक्षण अनुभवों की आवश्यकता होती है ताकि संभावित शिक्षकों को कक्षाओं में काम करने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो सके। इसके अलावा, कई शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षकों को विशिष्ट विषय क्षेत्रों या आयु समूहों, जैसे प्रारंभिक बचपन की शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, या विशेष शिक्षा में विशेषज्ञता के अवसर प्रदान करते हैं।

Unit :– 5.5 Voluntary organizations and Govt - agencies (स्वैच्छिक संगठन और सरकार,एजेंसियां)

प्रौढ़ शिक्षा और कौशल विकास के लिए स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता (Support to Voluntary Agencies for Adult Education and Skill Development)

Introduction (परिचय) :– राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के संचालन के लिए कार्य कार्यक्रम (पीओए) ने अन्य बातों के साथ–साथ सरकार और गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओ) के बीच एक वास्तविक साझेदारी के विकास की परिकल्पना की और यह निर्धारित किया कि सरकार उनकी व्यापक भागीदारी को बढ़ावा देने के

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

लिए सकारात्मक कदम उठाएगी। उन्हें उचित समर्थन प्रदान करके निरक्षरता के उन्मूलन में। वयस्क शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, विशेष रूप से 15–35 आयु वर्ग में, स्वैच्छिक क्षेत्र के माध्यम से, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, दो अलग–अलग योजनाओं के माध्यम से स्वैच्छिक एजेंसियों (वीए) को सहायता प्रदान कर रहा है, अर्थात् (i) प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता और (ii) जन शिक्षण संस्थान। साक्षरता और सतत शिक्षा में नवाचार और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए पूर्व की अवधारणा एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में की गई है। इसमें प्रौढ़ शिक्षा के लिए तकनीकी और शैक्षणिक सहायता के लिए राज्य संसाधन केंद्रों की स्थापना शामिल है। दूसरी ओर, जन शिक्षण संस्थान उन लोगों को व्यावसायिक शिक्षा कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करते हैं जिनके पास शिक्षा का कोई प्रारंभिक स्तर नहीं है।

सरकार ने अब दोनों योजनाओं को मर्ज करने और संशोधित योजना का नाम बदलकर ''वयस्क शिक्षा और कौशल विकास के लिए स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता योजना'' के रूप में बदलने का फैसला किया है और परियोजना के आधार पर स्वैच्छिक एजेंसियों का समर्थन करना जारी रखा है। इस प्रकार नई योजना पूर्ववर्ती एनजीओ आधारित योजनाओं को समाहित करती है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के संशोधित मापदंडों के अलावा, संशोधित योजना के कुछ घटकों के तहत बढ़ी हुई वित्तीय सहायता प्रदान की गई है। इस योजना को सरकार द्वारा समय–समय पर निर्दिष्ट दिशा–निर्देशों और नियमों और शर्तों के एक नए सेट के माध्यम से प्रशासित किया जाएगा।

योजना के उद्देश्य (Scheme Objectives) – इस योजना का मुख्य उद्देश्य कार्यात्मक साक्षरता, कौशल विकास और सतत शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों में व्यापक, साथ ही, स्वैच्छिक क्षेत्र की गहन भागीदारी को सुरक्षित करना है, विशेष रूप से 15–35 आयु वर्ग में, समग्र छत्र के तहत राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (एनएलएम) के इस प्रकार, योजना स्वैच्छिक प्रयास के माध्यम से, एनएलएम के समग्र उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करेगी, जिसमें शामिल हैं:

- साक्षरता और अंकगणित में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
- विकास की प्रक्रिया में संगठन और भागीदारी के माध्यम से उनके वंचित होने के कारणों से अवगत होना और उनकी स्थिति में सुधार की ओर बढ़ना।
- आर्थिक स्थिति और सामान्य कल्याण में सुधार के लिए कौशल हासिल करना।
- राष्ट्रीय एकता के मूल्यों को आत्मसात करना, पर्यावरण का संरक्षण महिलाओं की समानता, छोटे परिवार के मानदंडों का पालन, आदि।

अवयव (Component) :– इस योजना में 3 घटक शामिल हैं, अर्थात् राज्य संसाधन केंद्र, जन शिक्षण संस्थान और स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता।

- राज्य संसाधन केंद्र।
- स्वैच्छिक एजेंसियों।
- जन शिक्षण संस्थान सहायता।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow